इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BPCC-131
मनोविज्ञान का आधार

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

– इन्दिरा गांधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

– Indira Gandhi

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BPCC-131

मनोविज्ञान का आधार

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. (सेवानिवृत्त) विमला वीराराघवन
एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. एस. करूणानिधि
मनोविज्ञान विभाग
मद्रास विश्वविद्यालय

प्रो. एस.पी. के. जेना
एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. आशिमा नेहरा
एडीशनल प्रोफेसर, क्लिनिकल
न्यूरो साइंसेज सेंटर, मनोरोग विभाग
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
दिल्ली

डा. अनीता कांत
एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग
विवेकानन्द महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय

डा. कनिका खंडेलवाल
मनोविज्ञान संकाय
लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वुमेन
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. स्वाति पात्रा
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, दिल्ली

प्रो. सुहास शेटगोवेकर
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, दिल्ली

डा. मोनिका मिश्रा
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली

डा. स्मिता गुप्ता
मनोविज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक : डा. मोनिका मिश्रा, सह आचार्य, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली

संपादक : डा. मोनिका मिश्रा, सह आचार्य, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

		इकाई लेखक एवं हिंदी अनुवादक
खंड 1	**मनोविज्ञान क्या है?**	
इकाई 1	मनोविज्ञान : परिचय	डॉ. मीतू खोसला एवं डॉ. मोनिका मिश्रा हिंदी अनुवादक : डॉ. पी.के. खत्री, एसोसिएट प्रोफेसर, (सेवानिवृत) नेशनल पी.जी. महाविद्यालय, लखनऊ पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 2	**प्रत्यक्षीकरण, अधिगम एवं स्मृति**	
इकाई 2	संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला
इकाई 3	अधिगम	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला
इकाई 4	स्मृति	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला हिंदी अनुवादक : ज्योति श्रीवास्तव, दिल्ली (इकाई-2) हिंदी अनुवादक : डॉ. पी.के. खत्री, एसोसिएट प्रोफेसर, (सेवानिवृत) नेशनल पी.जी. महाविद्यालय, लखनऊ (इकाई-3 और 4) पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 3	**अभिप्रेरण एवं संवेग**	
इकाई 5	अभिप्रेरण	डॉ. मीतू खोसला एवं प्रो. सुहास शेटगोवेकर
इकाई 6	संवेग	प्रो. सुहास शेटगोवेकर एवं डॉ. मीतू खोसला हिंदी अनुवादक : ज्योति श्रीवास्तव, दिल्ली पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 4	**व्यक्तित्व एवं बुद्धि**	
इकाई 7	व्यक्तित्व	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला
इकाई 8	बुद्धि	डॉ. आरती सिंह एवं डॉ. मीतू खोसला हिंदी अनुवादक : एम. पी. कमल दिल्ली (इकाई – 7); ज्योति श्रीवास्तव, दिल्ली (इकाई – 8) पुनर्वीक्षण : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली
खंड 5	**प्रयोग संबंधी दिशानिर्देश**	डॉ. मोनिका मिश्रा हिंदी अनुवादक : डॉ. पुष्पेंद्र शर्मा, दिल्ली; पुनर्वीक्षण : डॉ. मोनिका मिश्रा

मुद्रण प्रस्तुति	आवरण	चित्रण
श्री मनजीत सिंह अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन), इग्नू, नई दिल्ली	आनन्दिता द्विवेदी इग्नू एलूमनस	तमल बसु, दिल्ली

सितम्बर, 2019

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN : 978-93-89668-00-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।
लेजर टाइप सेट– ग्राफिक प्रिंटर्स, मयूर विहार फेस 1, दिल्ली – 110091
मुद्रण: हाईटेक ग्राफिक्स, डी–4/3, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस–2, नई दिल्ली–110020

विषय वस्तु

		पेज सं
खण्ड 1	**मनोविज्ञान क्या है?**	
इकाई 1	मनोविज्ञान : परिचय	15
खण्ड 2	**प्रत्यक्षीकरण, अधिगम एवं स्मृति**	
इकाई 2	संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण	41
इकाई 3	अधिगम	77
इकाई 4	स्मृति	98
खण्ड 3	**अभिप्रेरण एवं संवेग**	
इकाई 5	अभिप्रेरण	121
इकाई 6	संवेग	143
खण्ड 4	**व्यक्तित्व एवं बुद्धि**	
इकाई 7	व्यक्तित्व	165
इकाई 8	बुद्धि	190
खण्ड 5	**प्रयोग संबंधी दिशानिर्देश**	213

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मनोविज्ञान का आधार : पाठ्यक्रम संबंधी निर्देश

मनोविज्ञान का आधार, पहला प्रारंभिक व अनिवार्य पाठ्यक्रम है, जो स्नातक की डिग्री के लिए प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम के रूप में पढाया जायेगा। यह पाठ्यक्रम कुल छह क्रेडिट का है जिसमें चार क्रेडिट सिद्धांत घटक के लिए तथा दो क्रेडिट प्रयोगात्मक घटक के लिए निश्चित किया गया है। पूरा पाठ्यक्रम पाँच खंडों में विभाजित है। हर खंड में एक खास विषय पर, एक से तीन इकाई में विचार किया गया है। सभी इकाइ तार्किक आधार पर क्रमबद्ध की गई हैं, जिससे हर विषय को समझने में आसानी हो। हर इकाई के आरंभ में विषय की भूमि का है जिसमें वर्ण्य-विषय के बारे में बताया गया है। विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के बाद अंत में संदर्भ-स्रोतों की सूची दी गई है, तथा अन्य संदर्भों का भी उल्लेख किया गया है। सबसे अंत में विशेष रूप से ऑनलाइन संसाधनों की सूची दी गई है, जो शिक्षार्थी इंटरनेट सेवाओं का उपयोग करना चाहते हैं, यह सूचि उनके लिए अत्यधिक सहयोगी है। विभिन्न विषयों से सम्बंधित विशेष सूचनाएं भी जोड़ी गई है। शिक्षार्थियों से निवेदन है कि वे पाठ्यक्रम की प्रस्तावना को ध्यानपूर्वक पढें, जिससे उन्हें पूरे विषय को क्रमबद्ध तरीके से समझने में सुविधा हो।

इस पाठ्यक्रम के पाँच खंड तथा आठ इकाइयां आपके समक्ष हैं। इकाइयों को विस्तार से पढ़ने से पहले, प्रस्तावना पर एक नज़र डाल लें, इससे पाठ्यक्रम में शामिल पूरी अध्ययन सामग्री का अध्ययन करने में सहयोग मिलेगा। नीचे इकाई-क्रम तथा विषय-सामग्री का व्याख्या की गई है। हर इकाई के विभिन्न अनुभागों में क्या सम्मिलित है, यह आपको विदित होता रहेगा और उसके आधार पर आप वह सब करते चलिए जो आपसे करने को कहा जाए।

इकाई का क्रम एवं प्रबंधन

1.0 सीखने का उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 अनुभाग

1.2.1 सह-अनुभाग-1

बोध प्रश्न

1.3 अनुभाग (अनुभाग का विषय)

1.3.1 सह-अनुभाग-2

बोध प्रश्न

प्रत्येक अनुभाग तथा सह-अनुभाग का संख्या क्रम तथा उसकी लम्बाई, हर इकाई में अलग-अलग हो सकती है। हर इकाई में चार अंतिम अनुभाग निम्न संख्याक्रम में रखे गये हैं-

- संदर्भ स्रोत एवं अन्य संदर्भ
- आकृतियों के संदर्भ-स्रोत

- ऑनलाइन स्रोत
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

अध्ययन में सुविधा तथा समझने में आसानी के लिए हर इकाई को विभिन्न अनुभागों में बांटा गया है। हर अनुभाग मोटे अक्षरों में लिखित है तथा हर सह-अनुभाग उसकी तुलना में छोटे परन्तु मोटे अक्षरों में लिखित है। सह-अनुभागों के अन्य विभागों का मोटे परन्तु छोटे अक्षरों में उल्लेख है जिससे समझने में आसानी रहे। आइये, अब हर इकाई के हर अनुभाग पर चर्चा करें।

सीखने का उद्देश्य

हर इकाई के आरंभ में उद्देश्य के बारे में जानकारी दी गई है। इसका उद्देश्य आपको यह बताना है कि आप पूरी इकाई में विस्तार से क्या पढ़ने वाले हैं।

प्रस्तावना

प्रस्तावना-अनुभाग में हम बताते हैं -

क) वर्तमान इकाई का पहले वाली इकाई से संबंध

ख) वर्तमान इकाई का वर्ण्य-विषय

ग) सभी अनुभागों के प्रस्तुतिकरण का क्रम, प्रस्तावना से सारांश तक।

सारांश

इस अनुभाग में पूरी इकाई में वर्णित विषय का सार प्रस्तुत किया गया है जिसका उद्देश्य शिक्षार्थी को विषय में संक्षेप में अवगत करवाना है।

बॉक्स

कुछ विषय वैचारिक तथा सम्बंधित अवधारणाओं से जुड़े होते हैं। कुछ किसी खास विषय के अध्ययन से सम्बंधित होते हैं। ऐसे विषयों को अलग से रेखांकित करते हुये समझना जरूरी होता है, इसी लिए इन्हें बॉक्स के अंदर रखा जाता है ताकि वे शिक्षार्थी का ध्यान आकर्षित कर सकें। बॉक्स में दी गई सामग्री विषयांतर होते हुये भी विषय को समझने में सहयोगी होती है, (i) इनमें कुछ विषय को समझने में सहयोगी टिप्पणियां हो सकती हैं, (ii) वैज्ञानिक या विचारक के मुख्य कार्य के संदर्भ में जानकारी हो सकती है, जिसकी विषय के साथ-साथ जानकारी महत्व रखती हो, या फिर (iii) किसी केस स्टडी का अध्ययन हो सकती है, जो मुख्य अध्ययन सामग्री में निहित विचार से सम्बंधित है।

चित्र

हर इकाई में अध्ययन के विषय को स्पष्ट करने के यथा सम्भव चित्र, आकृतियां, आंकड़े या फोटो दी गई हैं।

बोध प्रश्न

बोध प्रश्न शीर्षक के अंतर्गत अध्ययन सामग्री के अंत में कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। हर प्रश्न के नीचे उत्तर के लिए खाली जगह छोड़ी गई है।

अ) इसी जगह पर इनके उत्तर लिखे जाने चाहिए।

ब) खाली जगह में आवश्यकता हो तो, आरेख बनाया जा सकता है।

इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए केवल अध्ययन सामग्री को आधार बनायें। हर इकाई को ध्यान से पढ़ें, और अपने नोट्स तैयार करें। इनसे आपको पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देने में आसानी होगी तथा प्राप्त जानकारी की सहायता से आपके सत्र के अंत में होने वाली परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखने में सहायक होंगे।

मुख्य शब्द

हर इकाई के अंत में चुनिंदा शब्दों तथा तकनीकी शब्दों के विस्तृत अर्थ दिये गए हैं।

संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

हर इकाई के अंत में उन लेखों तथा पुस्तकों आदि की सूची दी गई है जिनका उपयोग लेखक ने इकाई की संरचना तैयार करने में किया है। इससे यह पता चलता है कि अध्ययन सामग्री विश्वस्त सूत्रों से जानकारी लेकर बनाई गई है। इसकी सहायता से आप विषय के विस्तृत अध्ययन के लिए, इन स्रोतों का अध्ययन कर सकते हैं। हर संदर्भ स्रोत में रचना का नाम, इसके लेखक का नाम, प्रकाशन का नाम तथा प्रकाशन वर्ष की जानकारी दी गई है।

अन्य संदर्भों का सूची छात्रों की विषय सम्बंधी जानकारी को ओर बढ़ाने की दृष्टि से दी गई है।

चित्रों का संदर्भ

विषय का वर्णन करते समय चित्र आकृतियों, चित्रों अथवा आरेखों का सहारा लिया गया है। उनके संदर्भ-स्रोतों की जानकारी हर इकाई में स्पष्ट दी गई है। जो आकृतियां या चित्र ऑनलाइन स्रोतों से लिए गए हैं, उनकी यूनीफॉर्म रिसॉर्स लोकेटर (URL), आपकी सहायता हेतु दिया गया है।

ऑनलाइन स्रोत

विभिन्न विषयों से सम्बंधित ऑनलाइन स्रोत, हर इकाई के अंत में दिये गए हैं। यदि अध्ययन सामग्री के अलावा आप अन्य सम्बंधित सामग्री के अध्ययन करना चाहते हैं तो, हर विषय के बारे में दी गई वेबसाइट पर जाकर आप उसका अध्ययन कर सकते हैं।

पुनरावलोकन प्रश्न

बोध प्रश्नावली के साथ-साथ हर इकाई में सारांश के बाद दोहराने के लिए प्रश्न दिये गए हैं। इन प्रश्नों के उत्तर तैयार कर आप अध्ययन सामग्री के बारे में अपनी जानकारी का निरीक्षण कर सकते हैं और सत्रांत में होने वाली परीक्षाओं के लिए प्रश्नपत्र या प्रश्नोत्तरी तैयार कर सकते हैं।

श्रव्य एवं दृश्य सामग्री

कुछ इकाइयों में श्रव्य एवं दृश्य सामग्री, प्रकाशित सामग्री के अतिरिक्त दी जाती है। यह सामग्री विषय के अध्ययन में, अतिरिक्त रूप से सहयोगी होती है।

इसके अलावा, आप इग्नू का एफएम रेडियो चैनल 'ज्ञानवाणी' (105.6 एफएम) सुन सकते हैं, जो नियमित रूप से पूरे देश में प्रसारित किया जाता है। मनोविज्ञान संकाय के विशेषज्ञ किसी विशेष विषय पर जब तब व्याख्यान देते हैं। उनसे फोन या इमेल के द्वारा सम्पर्क करके, इस का लाभ उठा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त ज्ञान-दर्शन टी.वी. चैनल पर मनोविज्ञान पर कार्यक्रम आते रहते हैं, उनका लाभ उठा सकते है। 'ज्ञानवाणी' एवं 'ज्ञान-दर्शन' की जानकारी www.ignou.ac.in पर प्राप्त

की जा सकती है। ज्ञानधारा, वेबकास्ट के माध्यम से, रेडियो तथा टेलिविजन चैनल से जुड़ सकते हैं। यह सुविधा इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा ज्ञानवाणी तथा ज्ञान दर्शन कार्यक्रमों को प्रसारण के लिए दी जाती है।

प्रयोगात्मक घटक

मनोविज्ञान का आधार पाठ्यक्रम के लिए प्रयोगात्मक परीक्षा भी ली जाती है। प्रयोगात्मक ज्ञान के लिए सत्र का आयोजन किया जाता है, जिनमें हिस्सा लेना अनिवार्य है। इस सत्र के दौरान सैद्धांतिक घटक के आधार पर प्रयोगों का आयोजन किया गया है। इन प्रयोगों का मूल्यांकन, अध्ययन केंद्र के शैक्षणिक परामर्शदाता करेंगे। अपने अध्ययन केंद्र पर स्त्रांत में, मनोविज्ञान पर प्रयोगात्मक परीक्षा देने का प्रावधान है।

सत्रीय कार्य

पूरी अध्ययन सामग्री के आधार पर सत्रीय कार्य दिये गए हैं। इनमें दिये गये प्रश्नों के उत्तर तैयार करके अध्ययन केंद्र पर जमा करना होता है। सत्रीय कार्य में जो अंक दिये जाते है उसका 30% अंतिम लिखित परीक्षा के अंकों में जोड़ दिये जाते हैं। सत्रीय कार्य में दिये गये प्रश्नों के उत्तर देने से पहले सभी इकाइयों तथा अतिरिक्त सामग्री को ध्यान से पढ़िये। सत्रीय कार्य में निहित प्रश्नों के उत्तर देते समय इन निर्देशों को ध्यान में रखें।

1) अपना अनुक्रमांक साफ-साफ लिखिए।

2) अपने शब्दों में तथा अपने हाथ से उत्तर लिखें।

3) साफ-साफ लिखें ताकि आपके द्वारा लिखित उत्तर पूरी तरह समझ में आ सके।

4) अपनी उत्तर पुस्तिका के एक ओर पर्याप्त जगह छोड़े, जहां पर परीक्षक आप के उत्तर के बारे में अपनी प्रतिक्रिया लिखित रूप में व्यक्त कर सके।

5) हर सत्रीय कार्य को अपने अध्ययन केंद्र पर जमा करने की अंतिम तिथि से पहले जमा कर दें। तिथि आप अपने क्षेत्रीय केन्द्र की वेबसाइट www.ignou.ac.in पर पता कर सकते हैं।

सत्रांत परीक्षा

अध्ययन सामग्री को पढ़ने व समझने के बाद, एवं श्रव्य व दृश्य कार्यक्रम से जानकारी लेने के बाद, आपको सत्रांत परीक्षा देनी होगी। सत्रांत परीक्षा के लिए उत्तर तैयार करते समय इन निर्देशों का ध्यान रखें।

1) प्रश्नों के उत्तर सटीक हो तथा अपने शब्दों में अपने हाथों से लिखे गये हों।

2) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

पाठ्यक्रम की तैयारी

अध्ययन सामग्री का पाठ्यक्रम (बीपीसीसी-131) विशेषज्ञों की समिति द्वारा तय किया गया है तथा पाठ्यक्रम तैयार करने वाले दल द्वारा तैयार किया गया है, जिसमें इकाई लेखक, सम्पादक, भाषा सम्पादक तथा पाठ्यक्रम सहयोगी शामिल हैं। विशेषज्ञों की समिति हर इकाई एवं खंडों के पाठ्यक्रम के विषयों तथा सहयोगी विषयों का चयन यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन-च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) का पालन करते हुये किया गया है। इकाइयों के लेखकों को हर इकाई की मुख्य अध्ययन सामग्री तैयार करने में अपनी दक्षता

का प्रमाण दिया है। सामग्री-सम्पादक ने पाठ्यक्रम में शामिल की जाने वाली अध्ययन सामग्री का बारीकी से अध्ययन किया है। उनका पूरा प्रयास रहा है कि पाठ्यक्रम में शामिल की गई अध्ययन सामग्री अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में सक्षम हो तथा सरलता से समझी जा सके।

सम्बंधित अन्य किसी जानकारी के लिए, पाठ्यक्रम संयोजक से सम्पर्क करें:

डा. मोनिका मिश्रा,
कमरा न. 31, ब्लॉक-एफ
स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज़,
इग्नू, नई दिल्ली।
E : monikamisra@ignou.ac.in.
P : 011-29572781

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम परिचय

मनोविज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र में विद्यार्थियों की अत्यन्त रुचि पाई गयी है। मनोविज्ञान जो कि 100 वर्ष से अधिक पुराना है, सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है। मानव व्यवहार के सूक्ष्मताओं को समझने व वर्णन करने के लिए, आत्मा के अध्ययन से लेकर इसका आधुनिक मनोवैज्ञानिक पद्धति, गहरायी से ज्ञान पैदा करने में सक्षम रहा है। इस विषय ने भारत में जबरदस्त उन्नति की है। 1915 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की पहली स्थापना से, आज मनोविज्ञान भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में एक अलग विभाग के रूप में अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है।

मनोविज्ञान मानसिक कार्यप्रणाली और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। वैज्ञानिक अध्ययन, विश्वसनीय तरीके से व्यावहारिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये किया जाता है। यह मानव व्यवहार के विभिन्न पहलुओं से संबन्धित प्रश्नों को खोजने व समझने का प्रयास करता है। जैसे कि उदाहरण के लिए प्रत्यक्षण, अधिगम, स्मृति, अभिप्रेरणा, संवेग, व्यक्तित्व, बुद्धि आदि। वैज्ञानिक नियमों ने इस विषय की वृद्धि में योगदान किया है, वर्तमान में मनोविज्ञान विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है, जैसे कि खेलकूद, फोरेंसिक, पर्यावरण, स्वास्थ्य इनमें से कुछ क्षेत्र हैं। मनोविज्ञान स्वयं व दूसरों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन चुका है।

बी.ए. कार्यक्रम का पहला मूल पाठ्यक्रम, मनोविज्ञान का आधार है। यह आपको मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान के क्षेत्र, उत्पत्ति, तरीकों और दृष्टिकोण से परिचय करायेगा। यह आपको मानव व्यवहार के लिए उत्तरदायी प्रकट अथवा अप्रकट प्रक्रियाओं के बारे में भी बतायेगा।

खंड परिचय

इस पाठ्यक्रम में 5 खंड हैं। **पहले खंड** में आपको मनोविज्ञान के क्षेत्र, आवश्यकता, पद्धति और व्यवहार के अध्ययन करने के तरीकों के बारे में बताता है। **दूसरा खंड** मूल मानसिक प्रक्रियाएँ जैसे, प्रत्यक्षण, अधिगम और स्मृति के बारे में बताता है। **तीसरा खंड** संवेग और अभिप्रेरणा के बारे में है। **खंड चार** व्यक्तित्व और बुद्धि के बारे में चर्चा करता है एवं **खंड पाँच** प्रयोगशाला कार्य की विवेचना करता है और इसके क्रियान्वित करने के बारे में बताता है। यह सिद्धांत घटक पर आधारित है।

खंड 1 यह आपको मनोविज्ञान के क्षेत्र का परिचय देता है। यह खंड आपको यह भी बताता है कि आगे के खंड में क्या विषय-वस्तु होंगी। इसके अन्तर्गत इकाई-1 आता है जो मनोविज्ञान के उद्भव को एक अलग विषय के रूप में बताता है। आगे यह प्रकृति, क्षेत्र और मनोविज्ञान के उपभागों की चर्चा करता है। इस क्षेत्र में किये जाने वाले शोध व अध्ययन वैज्ञानिक होते हैं इसलिए, व्यवहार के अध्ययन में प्रयोग किये जाने वाले मुख्य पद्धतियों की भी चर्चा की जायेगी।

खंड 2 यह भाग प्रत्यक्षण, अधिगम एवं स्मृति जैसी मानसिक प्रक्रियाओं का परिचय देता है। यह खंड 3 इकाइयों (2, 3, 4) से मिलकर बना है। इकाई-2 संवेदना और प्रत्यक्षीकरण को समाहित करता है और यह इसके स्वभाव, क्षेत्र और सैधान्तिक पद्धति पर ध्यान केन्द्रित करता है। प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम, प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक की चर्चा की जाएगी। यह गहराइ व दूरी के प्रत्यक्षण, गति प्रत्यक्षण एवं आकार प्रत्यक्षण की प्रक्रिया की भी विवेचना करेगा। इकाई-3 अधिगम की प्रक्रिया का वर्णन करेगा। अधिगम के प्रकार और अधिगम से संबंधित सिद्धांत की सहायता से सीखने की विवेचना की जाएगी। अंत में

अधिगम की नीतियां जैसे कि कल्पना, पूर्वाभ्यास और संगठन की चर्चा की जाएगी। इकाई-4 स्मृति की प्रक्रिया के बारे में वर्णन करता है। यह स्मृति के स्वभाव, कार्य क्षेत्र, प्रकार और सिद्धांत के बारे में बताता है। यह आपको भूलने के संप्रत्यय का परिचय देता है और स्मृति को बेहतर करने की विधियों पर एक प्रकाश डालता है।

खंड 3 इसके अन्तर्गत 2 इकाई आती हैं, (इकाई 5 और इकाई 6)। इकाई 5 आपको व्यवहार के एक महत्वपूर्ण पहलू का परिचय देता है जो कि अभिप्रेरणा है। यह अभिप्रेरणा के स्वभाव, प्रकार एवं सिद्धान्तों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह इकाई अभिप्रेरणा में संघर्ष एवं कुण्ठा की भूमिका का भी वर्णन करता है। इकाई 6 संवेग के सिद्धान्त, प्रकार एवं स्वभाव के बारे में विवरण प्रस्तुत करता है। संवेग, भाव एवं मनोदशा में अन्तर को भी प्रस्तुत किया जाएगा। अन्त में संवेग को मापने के प्रमुख विधियों की चर्चा की जाएगी।

खंड 4 इसके अन्तर्गत 2 इकाई आती हैं (इकाई 7 और 8)। इकाई 7 व्यक्तित्व के स्वभाव एवं सिद्धान्तों को प्रस्तुत करता है। व्यक्तित्व की माप भी इसी इकाई में प्रस्तुत किए जाऐंगी। अन्तिम इकाई बुद्धि के परिचय को प्रस्तुत करेगा। यह बुद्धि से संबंधित प्रमुख सिद्धान्त एवं संप्रत्यय की विवेचना करेगा। यह बुद्धि को मापने के प्रमुख परीक्षण का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है।

जैसा कि आपको पता है, इस पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक घटक समाहित हैं। इकाई 8 के अंत में प्रयोगात्मक घटक के दिशा-निर्देश प्रस्तुत किऐ गए हैं। खंड 5 में (परीक्षण एवं प्रयोग) इसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

खंड 1

मनोविज्ञान क्या है?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 मनोविज्ञान : परिचय*

रूपरेखा

1.0 सीखने का उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 मनोविज्ञान की परिभाषा

1.3 मनोविज्ञानः एक विज्ञान

1.4 मनोविज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास

1.5 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र

1.6 मनोविज्ञान में शोध

1.7 मनोविज्ञान में शोध की विधियाँ

1.7.1 वर्णनात्मक विधि

1.7.2 प्रयोगात्मक विधि

1.7.3 सह-सम्बन्धात्मक विधि

1.8 भारत में मनोविज्ञान

1.9 सारांश

1.10 पुनरावलोकन प्रश्न

1.11 मुख्य शब्द

1.12 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

1.13 चित्रों की संदर्भ

1.14 ऑनलाइन स्रोत

1.0 सीखने का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप इस योग्य होंगे कि :

- मनोविज्ञान को परिभाषित कर सकें;
- मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप समझ सके अथवा ग्रहण कर सके;
- मनोविज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास को जान सके;
- मनोविज्ञान के उपक्षेत्रों की व्याख्या कर सके;
- मनोविज्ञान के अध्ययन की विधियों की विवेचना कर सकें; तथा
- भारत में मनोविज्ञान के विकास को जान सकें।

* डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और डा. मोनिका मिश्रा, असिसटेंट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली।

1.1 प्रस्तावना

क्या आप जानते हैं कि मनोविज्ञान शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों ''साइके'' एवं ''लोगोस'' से लिया गया है? मनोविज्ञान का अर्थ साइके-लोगोस है। साइके का अर्थ आत्मा (जिन्दगी) एवं लोग्स का अर्थ ज्ञान (व्याख्या) अथवा आत्मा का अध्ययन से है। मनोविज्ञान के संस्थापक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों थे और दोनों ने इन दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर को खोजने का प्रयास वैज्ञानिक ढ़ंग से किया, जैसे प्रकृति एवं पालन-पोषण के मध्य भेद, स्वतंत्र इच्छा का अस्तित्व, आदि। मनोविज्ञान शब्द (लेटिन में साइकॉलोजिया) सोलहवीं शताब्दी के पश्चात् लेकिन जर्मनी में अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में दार्शनिक क्रिश्चियन वुरफ द्वारा प्रचलित हुआ। इस शब्द का अंग्रेजी में सबसे प्रभावशाली ढ़ंग से प्रयोग करने वाले हरबर्ट स्पेन्सर थे जिन्होंने 1870 में अपने ग्रन्थ 'मनोविज्ञान के सिद्धान्त', में प्रकाशित किया।

मनोवैज्ञानिकों ने आत्मा की जगह मन शब्द के प्रयोग को प्राथमिकता दी। मनोविज्ञान वह अन्तिम विशेष विज्ञान था जो उन्नीसवीं शताब्दी में दर्शनशास्त्र से अलग हुआ। आज मनोविज्ञान विद्यार्थियों में बहुत अधिक लोकप्रिय है तथा प्रतिदिन के जीवन का एक अंग बन चुका है। अतः इस इकाई में हम मनोविज्ञान की उत्पत्ति के बारे प्रचलित लोकप्रिय तथ्यों तथा सूचनाओं के बारे में बातचीत करेंगे। इस इकाई में मनोविज्ञान क्या है तथा मानव व्यवहार को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिए गए व्यवहारिक उपागमों की व्याख्या की जाएगी। इस इकाई में पुनः मनोविज्ञान के विभिन्न उप क्षेत्रों तथा मनोविज्ञान में शोध करने की विधियों पर चर्चा की जाएगी। जिन अलग क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक काम कर रहे हैं उनकी विवेचना भी की जाएगी। अन्त में भारत में मनोविज्ञान के विकास की भी चर्चा की जाएगी।

1.2 मनोविज्ञान की परिभाषा

मनोविज्ञान को परिभाषित करना कठिन है क्यों इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है अतः इस पर बहुत बड़ी परिचर्चा है कि मनोविज्ञान का क्या और कैसे अध्ययन किया जाना चाहिए। सबसे अधिक प्रचलित परिभाषा यह है कि मनोविज्ञान मानव एवं पशु के व्यवहार का विज्ञान है तथा यह विज्ञान मानव समस्याओं की प्रासंगिकता को सम्मिलित करता है। आज की सबसे अधिक स्वीकृत परिभाषा यह है कि '**मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का विज्ञान है।**' अतः इस परिभाषा के तीन भाग हैं। प्रथम, मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्यों कि यह क्रमिक रूप से सावधानीपूर्वक नियंत्रित अवस्था में मानव एवं पशु के व्यवहार का निरीक्षण करके आंकड़ों को एकत्रित करता है। अतः मनोविज्ञान में व्यवहार का मापन जितना संभव हो सकता है वह वस्तुनिष्ठ होता है। वह ज्ञान जो प्रयोगात्मक तथा अन्य विधियों के निरीक्षण द्वारा आंकड़ों को एकत्रित करने से प्राप्त किया जाता है, उसका पुनः उपयोग वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में किया जाता है।

द्वितीय, परिभाषा का व्यवहार शब्द क्रिया एवं प्रतिक्रिया का प्रत्यक्ष रूप से समाहित करता है। मानव या पशु जो भी करते है वे उनकी सोच होती है और उसे रिकार्ड किया जा सकता है जैसे, क्रिया, चिन्तन, संवेग, अभिवृत्ति, आदि। अन्त में, मानसिक प्रक्रिया शब्द उन आन्तरिक प्रक्रियाओं का उल्लेख करता है जैसे चिन्तन, मनोभाव/भाव, स्मरण, आदि। संक्षेप में, मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो मानव एवं पशु व्यवहार को समझने एवं उसकी भविष्यवाणी करने की खोज करता है (मार्गन, किंग, एवं रॉबिन्सन, 1984)।

बॉक्स 1.1

मनोविज्ञान मन एवं व्यवहार का अध्ययन है। यह एक ऐसी विद्या है जो मानव अनुभवों के सभी पक्षों को अपने में समाविष्ट करता है मस्तिष्क की क्रियाओं से लेकर शब्द की कार्यवाही, बालक के विकास से लेकर वृद्धों की देखभाल तक। प्रत्येक काल्पनिक वातावरण में वैज्ञानिक शोध केन्द्रों से मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सेवा, व्यवहार को समझना' मनोवैज्ञानिकों का कार्य है।

अमेरिकन साइकॉलोजिरल एशोसिएशन

1.3 मनोविज्ञानः एक विज्ञान

प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों ने यह जानकारी जाननी चाही कि कितने लोग संसार को जानते हैं। इसे 'एपिसटेमॉलोजी' (ज्ञान मीमांसा) के रूप में जाना गया (ग्रीक शब्द 'एपिसटेम' शब्द का अर्थ ज्ञान और 'लोग्स' का अर्थ होता भाषण)। यदि मनोविज्ञान के इतिहास को देखा जाए तो यह पता चलेगा कि मनोविज्ञान प्रारम्भ में शरीर क्रिया विज्ञान, जो जीव विज्ञान (प्राकृतिक विज्ञान) एवं दर्शन शाखा है, जो ज्ञान मीमांसा अथवा ज्ञान के सिद्धान्त के रूप में जानी जाती है, के मिलने से हुआ है। अतः मनोविज्ञान का प्रत्ययात्मक आधार दर्शनशास्त्र में पाया जाता, परन्तु मनोविज्ञान की एक उत्पत्ति एवं स्वतंत्र विज्ञान के रूप में उत्पत्ति जीवविज्ञान द्वारा हुई। प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिकों का यह विश्वास था कि मनोविज्ञान का विकास एक क्रमिक ढ़ाँचे में प्रयोगात्मक प्रयोगशाला में अनुसंधान करके किया जा सकता हैं। डार्विन (उद्विकासीय सिद्धान्त), न्यूटन (शारीरिक नियमों की प्रत्यात्मकता) एवं मेन्डेलीव (तत्वों की नियतिकालिक सारणी) के योगदान ने मनोवैज्ञानिक शोध के प्रति क्रमिक उपागम को मजबूत किया। अतः प्रारम्भ में मनोविज्ञान भौतिक शाखा, शरीर शाखा एवं मानसिक दर्शनशाखा का मिश्रण था एवं मनोवैज्ञानिक शोध मन शरीर शारीरिक सम्बन्धों तक सीमित था। आगे चलकर इस विद्या के विकास के आधार पर सामाजिक-सांस्कृतिक एवं मानव की के व्यवहार की अतंर्वैयक्तिक समस्याओं को इससे सन्निहित किया गया। यहाँ यह भी जोड़ा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिकों के सैद्धान्तिक सीखने की विद्या उदाहरण के लिए शरीरशास्त्रीय मनोवैज्ञानिक (तंत्रिका एवं ग्रन्थियों में अध्ययन पर विशेष ध्यान) एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक (मानव व्यवहार के सामाजिक पक्षों पर विशेष ध्यान) विशेष महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण हैं कि क्या मनोविज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान अथवा सामाजिक विज्ञान का अंग होना चाहिए। मनोविज्ञान को यदि प्राकृतिक विज्ञान माना जाए तो मुख्य पूर्वानुमान **प्राकृतिक अद्वैतवाद** (ह्रास के रूप में जाना जाता है, जहाँ एक सिद्धान्त या तथ्यों का ह्रास होता है या उसका सरलीकृत भाग और सरल हो जाता है), **प्रचालन** (वैधता को प्राप्त करना निर्भर करता है एवं वैधता में उन प्रक्रियाओं को जो उन्हें प्राप्त करने के लिए लगाई जाती हैं), **नियतिवाद** (सभी क्रियाएं प्राकृतिक नियमों पर आधारित है और उनकी व्याख्या प्राणियों के आनुवंशिक एवं वातावरण के कारणात्मक आधार पर व्यक्त करना चाहिए)। मनोविज्ञान को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में माने जाने के संदर्भ में, शोध कर्ता प्रयोगों का उपयोग करते है, वैज्ञानिक निरीक्षण एवं नियंत्रण की सभी सावधानियों को मानते हैं, परिणामों का व्याख्या मात्रात्मक अथवा सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से करते हैं। यह विधि प्रयोगों के डिजाइन अथवा अध्ययन एवं आंकड़ों की व्याख्या के लिए किसी संभावनाओं का प्रयोग नहीं करते हैं।

अतः मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का अध्ययन बहुत सावधानीपूर्वक तथा क्रमिक ढ़ंग से करता है। विज्ञान के अन्य क्षेत्रों की भांति इसका मूल्यांकन भी वस्तुगत होता है। यह एक आनुभविक उपागम है, यह सूचनाओं एवं आंकड़ों को निरीक्षण या प्रयोगों द्वारा एकत्र करता है, आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उस ढ़ाँचे के द्वारा की जाती है जिसको दुबारा देखा जा सके तथा सत्यापित किया जा सके, न कि दूसरों की विवेचना, विश्वास पर आधारित माना जाए।

बॉक्स 1.2: आनुभविक उपागम

सभी विज्ञान आनुभविकता पर आधारित है। जॉन लॉक द्वारा विकसित, यह उपागम बतलाता है कि केवल हमारे सांवेदिक अंग (सुनना, स्वाद, स्पर्श आदि) ही संसार से सूचनाओं को ग्रहण करने का न्यायिक स्रोत है।

जो प्रयोग किए जाते हैं उसके कुछ परिवर्तनों को इस प्रकार नियंत्रित और डिजाइन किया जाता है कि यदि कोई प्रयोग का दुबारा अध्ययन करना चाहे तो आसानी से कर सके। आंकड़ों को बहुत ही क्रमबद्ध एवं मात्रात्मक क्रम से एकत्रित किया जाता है जिससे कि उस क्रम को समझा जा सके जिस क्रम में घटना घटित हुई है। आज के समय में गुणात्मक विश्लेषण ने भी विशेष महत्व प्राप्त किया है। परिणामों का योगदान कुछ सिद्धान्तों को विकसित करने में होता है, जो व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करने में सहायक होते हैं। कभी-कभी सिद्धान्त शोध का मार्गदर्शन करने में भी सहायक होते हैं।

नियमान्वेषी एवं भावमूलक उपागम

यह एक ऐसा उपागम है जो मनोवैज्ञानिकों के लक्ष्य, प्रक्रियाओं एवं तथ्यात्मक अभिविन्यास को प्रदर्शित करता है। नियमान्वेषी मनोवैज्ञनिक व्यक्ति पर ध्यान न देकर वे सामान्य नियमों और सिद्धातों एवं मानसिक तथा व्यवहारिक प्रक्रियाओं को खोजते एवं स्थापित करते हैं। इस उपागम में सम्पूर्ण जनसंख्या में से कुछ संख्या में प्रतिभागियों को एक प्रतिनिध्यात्मक प्रतिदर्श के रूप चुना जाता है। प्रयोग के द्वारा आंकड़ा एकत्रित करने, उसको विश्लेषित करने के पश्चात् सावधानीपूर्वक अनुमान निकाला जाता है एवं उसे सामान्यीकृत किया जाता है। भावभूलक उपागम का सम्बन्ध एक विशेष घटना या व्यक्ति के समझने से है। यह जानकारी व्यक्ति पर ध्यान देती है क्योंकि यह उपागम इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति में एक विशिष्टता और उसे उसकी उसी स्थिति (विशिष्टता) के आधार पर समझा जाना चाहिए।

1.4 मनोविज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास

अब तक यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मनोविज्ञान को कैसे परिभाषित किया जाए और क्यों मनोविज्ञान को विज्ञान माना जाता है। प्रारम्भ में मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र का एक भाग था। लगभग 138 वर्ष पूर्व यह दर्शनशास्त्र से अलग होकर स्वतंत्र विज्ञान बना। 'मनोविज्ञान का इतिहास छोटा है लेकिन भूतकाल लम्बा है', यह टिप्पणी हरमन एबिंगहास द्वारा सदियों पूर्व दी गई, जो ग्रीक दार्शनिकों पर एक प्रकार का प्रतिबिम्ब है जिन्होंने मानव स्वभाव पर लिखा। अतः ग्रीक दार्शनिकों सुकरात (428-348 बीसीई), प्लेटो (428-347 बीसीई) एवं अरस्तु (384-322 बीसीई) ने मानव मस्तिष्क की व्याख्या करने एवं 4 बीसीई से पूर्व इसको शारीरिक सम्बन्ध से जोड़ने का प्रयास किया। प्रसिद्ध विचारक सुकरात 'अपने को जानो' ने आत्म एवं व्यक्तिगत प्रतिबिम्ब के महत्व पर बल दिया। आगे चलकर फ्रेंच दार्शनिक रेने डिकार्ट (1596-1650) नेपिनेल ग्रन्थि (शरीर क्रियाविज्ञान) 'आत्मा की जगह' माना, वह जगह जहां सारी सोच (चिन्तन) बनती है।

भौतिक विज्ञान में प्रयोगात्मक विधि की सफलता ने कुछ वैज्ञानिकों मन एवं व्यवहार के अध्ययन प्रयोग के उपयोग के लिए प्रेरित किया। पहला वैज्ञानिक जिसने मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया वह जर्मन शरीर क्रिया विज्ञानी गुस्टव थेमोडो फैक्नर (1801-1887) थे, जिन्होंने मनोविज्ञान की एक शाखा मनोभौतिकी का अध्ययन किया। पहली प्रयोगशाला 1879 में लिपज़िंग, जर्मनी में विलियम वुण्ट (1832-1920) द्वारा स्थापित की गयी। उस समय काफी उन्नत्ति हुई परन्तु दर्शनशास्त्र से अलग होना बहुत कठिन था। अमेरिकन साइकॉलोजिकल एशोशियन 1892 में प्रारम्भ हुआ और हॉल इसके प्रथम अध्यक्ष बने। विलियम जेम्स (1842-1910) ने मनोविज्ञान की पहली पुस्तक लिखी जो 'प्रिन्सपल ऑफ

साइकॉलाजी' के नाम से जानी जाती है। प्रारम्भ में मनोवैज्ञानिकों ने आनुभविक उपागम के आधार पर चिंतन, अवधान प्रतिमा आदि को समझने का प्रयास किया अथवा समझा। मन एवं मानसिक अनुभवों के अध्ययन के लिए प्रयोग किए गए। धीरे-धीरे विभिन्न विचारों के स्कूलों का प्रारम्भ मनोविज्ञान के स्वरूप के अध्ययन के लिए हुआ। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मनोविज्ञान के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मस्तिष्क न होकर व्यवहार होना चाहिए।

अब, मनोविज्ञान के मुख्य विचार के स्कूलों अथवा मनोविज्ञान के मुख्य संदेश का अवलोकन करेंगे, जिसने इस विद्या के विकास में विशेष योगदान किया है। इन उपागमों का प्रारम्भ परम्परा से आधुनिक एवं व्यवहार को परिभाषित करने के लिए हुआ तथा इन्होंने मनोवैज्ञानिकों के सीखने के आधार पर शोध किया।

1) **संरचनावादः** इसका मुख्य केंद्र मानव मस्तिष्क की प्रारम्भिक संरचना को विश्लेषित करना है। यह दृष्टिकोण संरचनावाद के नाम से जाना जाता है। यह **विलियम वुण्ट एवं एडवर्ड टिचेनर** (वुण्ट के विद्यार्थी) से संबंधित हैं। वुण्ट यह मानते थे कि चेतना के विचारों, अनुभव, संवेगों तथा अन्य मुख्य तत्वों में बांटा जा सकता है। किसी के आत्मगत अनुभवी का वस्तुगत आधार पर मापने एवं परीक्षण करने को **वस्तुगत अन्तर्दर्शन** के नाम से जाना जाता है। वस्तुगतता यहाँ बिना पक्षपात के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है और यह मनोविज्ञान में वस्तुगतता एवं मापन लाने का पहला प्रयास है। **एडवर्ड बी टिचनेर (1867-1927)** की रुचि मस्तिष्क की संरचना जानने को हुई। संरचनावाद के आने से चेतना के तत्वों को जानने की रुचि पैदा हुई। प्रारम्भ में संरचनावाद की बहुत मजबूत शुरुआत हुई थी परन्तु 1900 से यह धूमिल हो गई।

बाक्स 1.3

विलियम वुण्ट (1832-1920) : प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के पिता

विलियम मैक्सीमिलिएन वुण्ट का जन्म 16 अगस्त, 1832 में नेकराउ, बाडेन, जर्मनी में हुआ था। ये मैक्समिलियन वुण्ट एवं उनकी पत्नी मैरी फ्रैजरक के चौथी सन्तान थे। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा कैथोलिक जिमनेजियम में प्रारम्भ की जिसको इन्होंने पसन्द नहीं किया और फेल हो गए। ये हाइडेलबर्ग के दूसरे जिमनेजियम में स्थानांतरित किए गए जहां से 1851 में ये स्नातक हुए। वुण्ट ने मेडिसिन में दाखिला लिया और एक खराब शुरुआत के बाद ये अपने अध्ययन में आगे बढ़े। वुण्ट, हरमन वान हेल्यहोन्टज के सहायक बने। इनका मूल कार्य 'प्रिंसिपल ऑफ फिजिआलोजिकल साइकॉलोजी,' 1873 एवं 1874 में प्रकाशित हुआ। उनके इस कार्य के सिद्धान्त को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में प्रस्तावित किया एवं पूरे संसार को वैज्ञानिक मनोविज्ञान की ओर प्रेरित किया।

चित्र 1.1: विलियम एम. वुण्ट

स्रोत : http://www.famous psychologists.org/

2) **प्रकार्यवादः** यह दृष्टिकोण डार्विन के प्राकृतिक चयन सिद्धान्त से पूरी तरह प्रभावित था (प्रकार्यवादियों का विश्वास था कि यह सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर पूर्णतः प्रतिपादित किया जा सकता है) तथा अध्ययन का केन्द्रबिन्दु व्यवहार एवं मस्तिष्क की क्रियात्मकता है (जैसे अधिगम, स्मरण, समस्या-समाधान एवं अभिप्रेरणा)। **जॉन डीवी (1859-1952)** ने प्रकार्यवाद को विकसित किया, मस्तिष्क एवं व्यवहार क्या करते है तथा कैसे एक व्यक्ति, को जटिल एवं नई परिस्थितियों को स्वीकार करने योग्य, बनाते हैं। **विलियम जेम्स (1842-1910)** इसके मुख्य सहयोगी इस बात के लिए चितिंत थे कि किस प्रकार मस्तिष्क वास्तविक संसार में लोगों को कार्य करने की आज्ञा देता है। यह उपागम प्रकार्यवाद के नाम से जाना गया। जेम्स ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की।

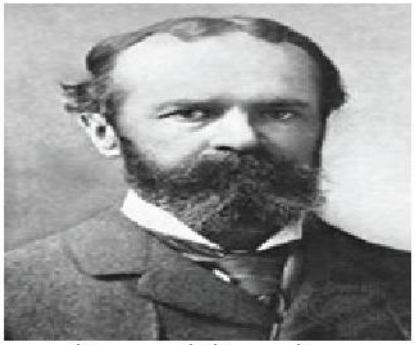

चित्र 1.2: विलियम जेम्स

स्रोत :https://www.britannica.com/

3) **गेस्टाल्ट मनोविज्ञान :** बाद में मनोवैज्ञानिकों ने संवेदना के अध्ययन के लिए प्रयोग किया, यह जानने के लिए की मस्तिष्क किस प्रकार कार्य करता है। 1912 में, **मैक्स वर्दाइमर** (1880-1943), **कर्ट कोफ्का** (1886-1941) एवं **वोल्फगैंग कोहलर** (1887-1967) ने जर्मनी में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना की। उन्होंने संवेदनिक अनुभवों के संपूर्ण सिद्धान्तों पर विशेष बल दिया, संवेदना को सम्बन्धों एवं संगठनों से संपूर्ण ढंग से जोड़ा। उन्होंने मानव व्यवहार के मस्तिष्क का अध्ययन संगठनात्मक सिद्धान्तों को लगाकर किया।

चित्र 1.3: मैक्स वर्दाइमर, कर्ट कोफ्का, वोल्फगैंग कोहलर

स्रोत : http://slideplayer.it/slide.576962/2/images/

4) **व्यवहारवाद :** यह स्कूल **जॉन बी. वाटसन** (1879-1958) एवं **बरहस फ्रेडरिक स्किनर** (1904-1990) द्वारा प्रारम्भ किया गया, जिन्होंने मस्तिष्क को अध्ययन के लिए स्वीकार नहीं किया और इस बात पर बल दिया कि मनोविज्ञान को केवल व्यवहार के निरीक्षणात्मक स्वरूप का अध्ययन करना चाहिए। बनावटी प्रक्रियाओं को उपेक्षित करते हुए, उन्होंने व्यवहार के अध्ययन को विशेष महत्व दिया। वाटसन ने अनुबन्धित अनुक्रियाओं, सीखे हुए व्यवहार तथा पशु व्यवहार पर बल दिया। **इवान पेट्रोविक पेवलॉव** (1849-1936) एक शरीर क्रिया विज्ञानी, जिनको पाचन के अध्ययन के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। इन्होंने यह निष्कर्ष दिया कि भोजन के अतिरिक्त, दूसरे उद्दीपक लार स्राव करा सकते हैं और इसके आधार पर उन्होंने अनुबन्धित रिफ्लेक्स का विस्तृत अध्ययन किया।

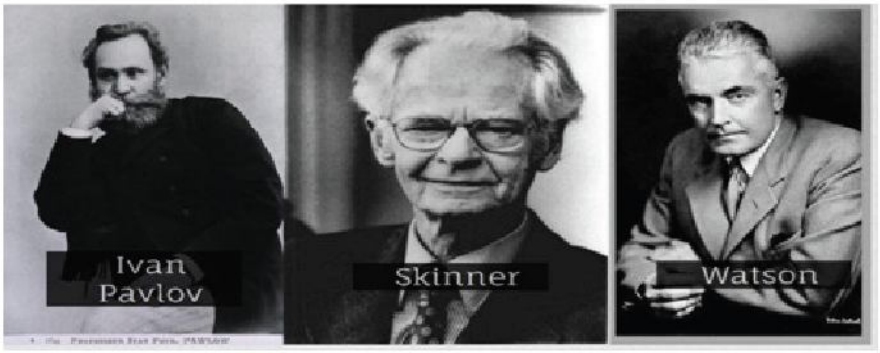

चित्र 1.4: इवान पैवलॉव, बी.एफ. स्किनर, जे.बी. वाटसन

स्रोत : http://www.emaze.org/

5) **मनोविश्लेषण :** मनोविश्लेषण की स्थापना आस्ट्रीयन मनोचिकित्सक **सिगमंड फ्रायड** द्वारा (1856-1938) की गई। फ्रायड का मानना था कि तंत्रिका विकृति में अचेतन अभिप्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और उन्होंने बच्चों के प्रारम्भिक व्यक्तित्व विकास के अनुभवों पर भी बल दिया। फ्रायड का मानना कि अर्ज एवं प्रेरक

उसके व्यवहार एवं सोच में प्रदर्शित होती है। अचेतन की भूमिका विचार, स्मृतियां एवं अनुभव केन्द्र बिन्दु होते हैं। ये अचेतन विचार एवं स्मृतियां मुख्य बातचीत एवं स्वप्न व्याख्या द्वारा प्रदर्शित किए जाते हैं, यह प्रक्रिया मनोविश्लेषण कहलाती है। फ्रायड, ने **कार्ल युंग** (1875-1961), **एलफ्र्ड एडलर** (1870-1937), **कारेन हॉर्नें** (1855-1952) एवं **एरिक एरिक्सन** (1902-1994) जैसे मनोवैज्ञानिकों को प्रभावित किया। उनका उपागम मनोगत्यात्मक उपागम के नाम से जाना जाता है जो आगे चलकर नवा फ्रायडियन के नाम से प्रचलित हुआ।

चित्र 1.5: सिगमंड फ्रायड
स्रोत : https://www.alamy.com/stock-photo

6) **मानवतावादी संदर्श** : मनोविज्ञान में यह 'तीसरी शक्ति' के रूप में भी जाना जाता है, जिसके अनुसार मानव की योग्यताओं स्वयं अपनी जीवन द्वारा निर्देशित होती है। इसका विशिष्ट लक्षण स्वतंत्र-इच्छा, किसी के भाग्य/नियति को चुनने की स्वतंत्रता, आत्म-संतुष्टि के लिए प्रयास एवं किसी की अपनी क्षमता की उपलब्धि है। इसके मुख्य संस्थापक **अब्राहम मैस्लो (1908-1970)** एवं **कार्ल रॉजर्स (1902-1987)** हैं।

चित्र 1.6: कार्ल रॉजर्स और अब्राहम मैस्लो
स्रोत : http://slideplayer.cz/slide

चित्र 1.7: हरमन एब्बिनघास
स्रोत : https://quotesgram.com/hermann-ebbinghaus-quotes

7) **संज्ञानात्मक संदर्श** : गैस्टाल्ट उपागम एवं कम्प्यूटर के विकास ने उच्च-स्तरीय मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के प्रति रुझान को उद्दीप्त किया। 1960 के दशक में इस संदर्श में विशिष्टता प्राप्त की। यह संदर्श मुख्य रूप से स्मरण, बुद्धि, भाषा, समस्या-समाधान एवं निर्णय क्षमता पर केन्द्रित है। इस संदर्श के मुख्य सहयोगी **हरमन एब्बिनघास (1850-1909)** हैं, जिन्होंने निरर्थक पदों की क्रमिक सूची के सीखने में स्मृति साहचर्य के प्रभाव का अध्ययन किया तथा **सर फ्रेडरिक बार्टलेट (1886-1969)** जिन्होंने स्मृति की सामाजिक एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया।

8) **सामाजिक सांस्कृतिक संदर्श** : इसका मुख्य केन्द्र व्यवहार को प्रमाणित करने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों पर है। इस परिप्रेक्ष्य से किया गया शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वातावरण के विभिन्न प्रभावों को, सामाजिक मानकों को, वर्ग विभिन्नता को, मानव जातीय पहचान आदि को दर्शा सकता है। सामाजिक सांस्कृतिक मनोविज्ञान ने यह निष्कर्ष दिया कि पाश्चात्य संस्कृति का मानक मुख्यतः **वैयक्तिकता'** की तरफ होती है। पूर्व एशियन संस्कृति के मानक की उन्मुखता मुख्यतः सामूहिक अथवा अन्तः आश्रितता पर होती है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक **लीवॉन फेस्टिंगर** (1957) संज्ञानात्मक असंगति के सिद्धान्त को दिया, जो यह बतलाता है, कि यदि व्यक्ति अस्थिरतापूर्वक अपने विश्वास, अभिवृत्ति एवं मत के अनुसार कार्य करता है तो वह उसके लिए जागरूक होता है।

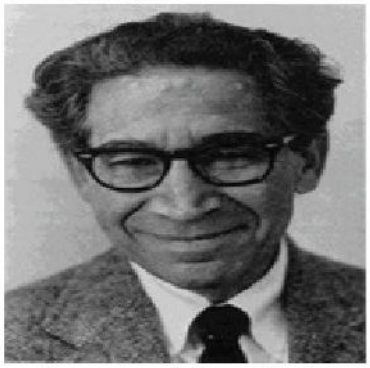

चित्र 1.8: लीवॉन फेस्टिंगर
स्रोत : https://hubpages.com/education/

9) **जैविकीय संदर्श** : इसका सम्बन्ध व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के जैविकीय आधार से होता है। तंत्रिका प्रणाली, हार्मोन्स, मस्तिष्क रसायन आदि व्यवहार के जैविकीय कारक और ये शोध के केन्द्र बिन्दु है।

10) **उद्विकासीय संदर्श** : यह संदर्श **चार्ल्स डार्विन** के प्राकृतिक चुनाव सिद्धान्त से प्रभावित है। उद्विकास संदर्श सर्वप्रथम डार्विन द्वारा दिया गया जिसमें तीन मुख्य तत्व निहित है परिवर्तन, वंशागति एवं चयन। आन्तरिक यांत्रिकी अनुकूलन जो प्राकृतिक चयन का उत्पाद है एवं जो पूरे विश्व में मानवों के जीवित रहने एवं पुनरुत्पादित करने में सहायता करता है। उद्विकासीय मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि व्यवहारात्मक पूर्ववृत्ति अथवा प्रवृत्ति जैसे 'आक्रामकता' का निर्धारण जीन्स द्वारा होता है और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित होता है। उद्विकासीय संदर्श द्वारा किए गए शोध विभिन्न जातियों के व्यवहारों (आक्रामकता, सीजन, आदि) का परीक्षण करते हैं जो उद्विकास द्वारा प्रभावित हो सकता है। वे सामाजिक सांस्कृतिक कारकों को भी महत्व देते हैं जो वास्तविक व्यवहार को आगे बढ़ा सकते हैं। **डेविड बस** उद्विकासीय मनोविज्ञान के मुख्य संस्थापक हैं।

चित्र 1.9: डेविड एम. बुश
स्रोत : https://thebestschools.org/

सारिणी 1.1: मनोविज्ञान के महत्वपूर्ण स्कूल

मनोविज्ञान के स्कूल	मुख्य विचार	मुख्य संस्थापक
संरचनावाद	'अन्तदर्शन' की सहायता से मनोवैज्ञानिक अनुभव के भौतिक तत्वों अथवा संरचनाओं को पहचानते हैं।	विलियम वुण्ट, एवर्ड बी. टिचनर
प्रकार्यवाद	इसका केन्द्र बिन्दु यह है कि वास्तविक संसार में मस्तिष्क कैसे लोगों को काम करने की अनुमति देता है।	विलियम जेम्स
मनोविश्लेषण	व्यवहार को निर्धारित करने के लिए अचेतन, चिन्तन, अनुभव, स्मृति एवं प्रारम्भिक शैशवावस्था के अनुभवों की भूमिका केन्द्र बिन्दु है।	सिग्मण्ड फ्रॉयड
गेस्टाल्ट	इसका केन्द्र बिन्दु प्रत्यक्षण एवं संवेदना है, संपूर्णता उसके भागों के जोड़ से बड़ा है।	मैक्स वर्दाइमर, कर्ट कोफ्का, वोल्फगैंग कोहलर
व्यवहारवाद	इसका केन्द्र बिन्दु केवल निरीक्षणात्मक व्यवहार है	इवॉन पेवलॉन, जॉन बी वाटसन, बी.एफ. स्कीनर
मानवतावाद	आत्म-संतुष्टि एवं स्वतंत्र इच्छा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।	अब्राहम मैस्लो एवं कार्ल रॉजर्स
संज्ञानात्मक	इसका सम्बन्ध मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन से है जैसे – प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन, स्मृति, एवं निर्णय-क्षमता।	हरमन एबिंगहॉस, सर फ्रेडरिक बार्टलेट, जीन पियाजे

सामाजिक सांस्कृतिक	यह इस पर आधारित है कि किस प्रकार व्यक्ति जिस सामाजिक परिस्थितियों एवं संस्कृति में अपने को पाता है, वह उसके व्यवहार एवं सोच को प्रभावित करता है।	फ्रिट्ज हाईडर, लियोन फेस्टिंगर, स्टानली स्कैकटर
जैविकीय	व्यवहार उत्पत्तिमूलक प्रभाव, हार्मोन्स एवं तंत्रिका यांत्रिकी का परिणाम है।	चार्ल्स डार्विन, ई. विल्सन, जे. एम. हारलो
उद्विकासीय	व्यवहार के उद्विकासीय उदगम से सम्बन्धित है।	डेविड एम. बस, डी. सिंह

बोध प्रश्न 1

1) मनोविज्ञान की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मनोविज्ञान को विज्ञान क्यों माना जाता है।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्न सारिणी को पूरा करें :

मनोविज्ञान के स्कूल	मुख्य विचार	मुख्य विचारक
संरचनावाद		
प्रकार्यवाद		
मनोविश्लेषण		
गेस्टाल्ट		
व्यवहारवाद		
मानवतावाद		
संज्ञानात्मक		
समाजिक-सांस्कृतिक		
जैविकीय		
उद्विकासीय		

1.5 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र

मनोविज्ञान के विभिन्न उपक्षेत्र हैं। मनोविज्ञान मस्तिष्क, व्यवहार, प्रत्यक्षीकरण, अधिगम तथा कुछ अन्य अध्ययन के वृहद क्षेत्र को सम्मिलित करती है। मनोविज्ञान के उपक्षेत्रों का वर्णन करने से पूर्व मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक तथा मनोचिकित्सीय सामाजिक कार्यकर्ता के मध्य अन्तर जानना आवश्यक है। एक मनोवैज्ञानिक मेडिकल डिग्री न लेकर, मनोविज्ञान में डाक्टरेट डिग्री लेता है। एक विशिष्ट क्षेत्र में शैक्षणिक प्रशिक्षण एवं विशिष्टता लेने के पश्चात् मनोवैज्ञानिक एक व्यवसायिक अथवा कैरियर के परिवेश में कार्य करता है। दूसरी ओर एक मनोचिकित्सक के पास मनोचिकित्सा में मेडिकल डिग्री होती है और जो मनोवैज्ञानिक रूप से विकृत रोगियों का निदान करके दवा देकर उपचार करते हैं। मनोचिकित्सीय सामाजिक कार्यकर्ता का क्षेत्र इससे बहुत सम्बन्धित है जिसके पास इस क्षेत्र में स्नातकोत्तर डिग्री होती है और इनका मुख्य उद्देश्य उन पर्यावरणीय परिस्थितियों में कार्य करना होता है जिनका प्रभाव मनोवैज्ञानिक विकृतियों पर पड़ती है। चित्र 1.10 उन सेटिंग के प्रकारों को दर्शाता है जहाँ मनोवैज्ञानिक कार्य करते हैं।

मनोवैज्ञानिक ने व्यवहार के विभिन्न प्रतिरूपों की जाँच एवं अध्ययन किया की किस प्रकार वाहय एवं आन्तरिक कारक मस्तिष्क एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिक की अलग-अलग रुचियां होती हैं। कुछ सामाजिक मनोविज्ञान में रुचि रखते है, जबकि कुछ की रुचि संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में हो सकती है जबकि कुछ की रुचि सामुदायिक एवं विरासात्मक मनोविज्ञान दोनों में होती है।

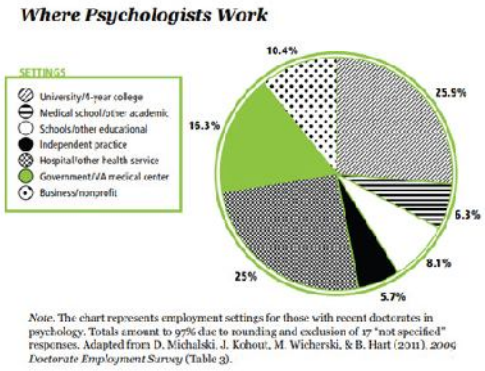

चित्र 1.10 : मनोवैज्ञानिक कहाँ कार्य करते हैं?

स्रोतः http://www.apa.org/

उपरोक्त ग्राफ उन लोगों के व्यवसाय सेटिंग को दर्शा रहा है जिन्होंने अभी मनोविज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। कुल 97 प्रतिशत प्रक्रियाएं, 17 प्रतिशत प्रतिक्रियाएं स्पष्ट नहीं हैं। डी. मीनाक्षी, जे. मोहूर, एम. विचेरस्की एवं बी. हार्ट (2011), 2009 डाक्टरेट रोजगार सर्वेक्षण (तालिका 3) द्वारा लिया गया। कुछ सेटिंग इस प्रकार से हैः विश्वविद्यालय/4 वर्ष कॉलेज; मेडिकल स्कूल/अल्य शैक्षणिक; स्कूल/अन्य शिक्षण; स्वतंत्र प्रैक्टिस/व्यवसाय; अस्पताल/अन्य स्वास्थ्य सेवाएं; सरकारी/वीए मेडिकल केन्द्र; व्यवसाय/लाभ निरपेक्ष।

मनोविज्ञान के विभिन्न अनुप्रयोग एवं कार्य के विभिन्न क्षेत्र हैं। मनोविज्ञान के व्यवसाय-क्षेत्र एवं मुख्य उपक्षेत्र निम्नवत् हैं :

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान : यह वह क्षेत्र है जहाँ मनोवैज्ञानिक मानव मस्तिष्क चिन्तन, स्मृति एवं सीखने का अध्ययन करता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को उपयोग निर्णय-क्षमता प्रक्रिया तथा हम संसार को कैसे देखते हैं उसके लिए किया जाता है।

नैदानिक मनोविज्ञान : यह क्षेत्र मानसिक विकृतियों के मापन, निदान, कारणों एवं इलाज

से सम्बन्धित होता है। अधिकांश नैदानिक मनोवैज्ञानिक राज्य मानसिक अस्पताल अथवा सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र, स्कूल, स्वतंत्र व्यवसाय, शोध कार्य एवं अध्ययन में लगे हुए हैं।

परामर्श मनोविज्ञान : परामर्श मनोवैज्ञानिक हल्के संवेगात्मक अथवा व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रसित व्यक्तियों की सहायता करता है। प्रायः जो लोग व्यवसाय पसन्द अथवा शैक्षणिक प्रोग्राम में क्या विषय चयन करना आवश्यकता महसूस करते हैं वे परामर्श मनोवैज्ञानिकों की सहायता लेते है। वे विभिन्न प्रकार के मापनीयों जैसे परीक्षणों एवं साक्षात्कार का प्रयोग उनकी रुचियों, अभिक्षमता, बुद्धि अथवा व्यक्तित्व के गुणों को जानने के लिए करते हैं। कुछ परामर्शदाता परिगठित एवं वैवाहिक समस्याओं के समाधान में भी सहायता करते हैं।

पर्यावरण मनोविज्ञान : इसका केन्द्र बिन्दु मानव-पर्यावरण अतः सम्बन्धों पर होता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग लोगों एवं उनके संपोषित रहन-सहन के मध्य अन्तःक्रिया को सुधारने में किया जाता है।

स्कूल मनोविज्ञान : मनोविज्ञान के इस मुख्य क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु अधिगम और स्कूल प्रोग्रामों की प्रभावकता है। स्कूल मनोवैज्ञानिक प्रारम्भिक, माध्यमिक स्कूल के बच्चों, अध्यापकों, माता-पिता एवं स्कूल प्रशासन के लिए अथवा साथ कार्य करता है। वे स्कूल में परामर्श एवं निर्देशन देते हैं एवं क्षेत्रों की रुचियों, अभिक्षमता, समायोजन, सीखने की योग्यता, बुद्धि एवं अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों का मापन करते हैं। परीक्षण उन छात्रों के निदान में सहायक होता है जिनमें व्यवहारिक कड़िनाइयां होती हैं। जिन छात्रों को विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है उनको परामर्श भी दिया जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान : अध्यापन का मनोविज्ञान इस क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक उन बहुत सी सामान्य समस्याओं से जुड़े होते हैं जिनका सम्बन्ध तत्काल से नहीं होता है। वे छात्रों की प्रभाविकता को बढ़ाने के लिए स्कूल पाठ्यक्रम को सिखाने एवं अभिप्रेरणात्मक कौशल के लिए निर्देशित करते है।

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान : इस क्षेत्र के अध्ययन का सम्बन्ध जीवन के विभिन्न तथ्यों जैसे व्यवहार, अधिगम, स्मृति, प्रत्यक्षण इत्यादि का नियंत्रित अवस्था में प्रयोगशाला अथवा क्षेत्र में प्रयोग करने से होता है। वे व्यवहार एवं चिन्तन के आधार को जानने तथा शोध परिणाम के आधार पर कुछ परिमार्जित तकनीकियों को विकसित करते है। वे यह खोजने का प्रयास करते हैं कैसे मानसिक प्रक्रियाओं अथवा व्यवहारों का अनुभव होता है एवं कैसे व्यवहारों को निर्देशित किया जा सकता है।

शरीरक्रिया मनोविज्ञान : यह क्षेत्र मानव एवं पशु के मस्तिष्क एवं व्यवहार के मध्य के सम्बन्धों का परीक्षण करता है। शरीरक्रिया मनोवैज्ञानिकों का केन्द्र बिन्दु व्यवहार पर तंत्रिका एवं ग्रन्थियों प्रणालियों के प्रभाव को देखना होता है। वे व्यवहार के जैविकीय आधार के अध्ययन हेतु आक्रामक एवं अनाक्रामक प्रविधियों का उपयोग करते हैं।

संगठनात्मक मनोविज्ञान : कर्मचारियों के कार्य निष्पादन एवं खुशी को बढ़ाने के लिए कार्य-क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों सिद्धान्तों का अनुप्रयोग किया जाता है। संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक, विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग करके कर्मचारियों को चयनित करके उनको उनके अनुकूल नौकरी के अवसर प्रदान करते हैं। बहुत से संगठन संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक को चयनित करते हैं जिससे वे कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर सकें, उनमें कार्य-संतुष्टि एवं अन्तः वैयक्तिक कौशलों का प्रबन्ध कर सकें, कर्मचारी-नियोक्ता के मध्य अच्छा सम्प्रेषण स्थापित कर सके। इस क्षेत्र में शोध का सम्बन्ध उन संगठनात्मक सेक्टरों की समस्याओं से है जो कर्मचारियों के कार्य के परिणाम अथवा उनकी अन्य संवेगात्मक समस्याओं से संबंधित है।

सामाजिक मनोविज्ञान : सामाजिक मनोविज्ञान लोगों के समूहों, उनका एक दूसरे से सम्बन्ध, उनकी विशेषताओं, अभिवृतियों, विश्वास, उनकी निर्णय क्षमता की प्रक्रिया एवं समूह के अन्य सदस्यों के सम्प्रेषण आदि से है। समूह में व्यक्ति के व्यवहार को समझने पर बल दिया जाता है।

विकासात्मक मनोविज्ञान : विकासात्मक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार के आगे जीवन के विस्तार से है, अर्थात् बचपन अवस्था से प्रारम्भ हो, किशोरवस्था के द्वारा वयस्क अवस्था और कैसे विभिन्न विकासात्मक स्तरों पर व्यवहार के परिवर्तित नमूनों के अध्ययन से है। विकासात्मक मनोविज्ञान विशेष रूप से शैशवअवस्था में होने वाले व्यवहारात्मक विकृतियों के परीक्षण का प्रयास करते हैं। वे बच्चों में होने वाले संज्ञानात्मक, प्रत्यक्षात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं भाषा विकास को समझने का प्रयास करते हैं।

सामुदायिक मनोविज्ञान : यह मनोविज्ञान का नया क्षेत्र है जो सामुदायिक समस्याओं, सिद्धान्तों, सामाजिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों से सम्बन्धित होते हैं। मनोवैज्ञानिक द्वारा उन लोगों की समस्याओं के समाधान करने में सहायता मिलती है जो एक समुदाय में रहते है, एवं अपने पारम्परिक मनोचिकित्सा के स्वरूप, तनाव, बच्चों के पालन-पोषण की प्रैक्टिस, तथा सामाजिक प्रणाली को खोजते हैं।

खेल मनोविज्ञान : यह भी एक नया क्षेत्र है जिसका केन्द्र बिन्दु खेल व्यवहार का मनोवैज्ञानिक पक्ष है। खेल मनोवैज्ञानिक व्यवसायिक टीमों के साथ स्कूल/कालेज स्तर अथवा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर टीम कार्य एवं व्यायाम पर कार्य करके खेल में निष्पादन के स्तर को बढ़ाता है।

स्वास्थ्य मनोविज्ञान : यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है जिसका सम्बन्ध शारीरिक प्रक्रियाओं, व्यवहार एवं सामाजिक कारकों के प्रभाव को स्वास्थ्य एवं बीमारी पर देखना है। स्वास्थ्य मनोवैज्ञानिक नैदानिक सेटिंग में कार्य करते हैं, एवं उनका सम्बन्ध उच्च शिक्षण संस्थाओं में शोध एवं अध्यापन से भी होता है।

फारेंसिक मनोविज्ञान : यह मनोविज्ञान का नया क्षेत्र है, जो आपराधिक, न्यायिक प्रणाली एवं न्यायिक खोज में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग करता है। न्यायिक मनोवैज्ञानिक पीड़ितों के अधिकारों, अपराधियों के अधिकारों, अपराधियों के लेखाचित्र, नीति निर्धारण तथा अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में कार्य करते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) मनोचिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक के मध्य अन्तर बतलाइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) खेल एवं न्यायिक मनोवैज्ञानिक के कार्यों को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 मनोविज्ञान में शोध

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि मनोविज्ञान को विज्ञान के रूप में माना जाता है क्योंकि यह वैज्ञानिक उपागम के मुख्य पूर्वानुमानों को पूरा करता है। वैज्ञानिकता का अर्थ यह है कि आंकड़ों के एकत्रित करने एवं व्याख्या करने में वस्तुगत पक्षपात होने की संभावना कम हो जाती है। अतः वैज्ञानिक खोज में मुख्य मान्यताएं निम्न हैं :

- **वर्णन** : एक मनोवैज्ञानिक का सम्बन्ध व्यवहार के निरीक्षण से होता है जिसके वर्णन का केन्द्र बिन्दु क्या घटित हो रहा है, कहां घटित हो रहा है, किस के लिए घटित हो रहा है और कैसे घटना घटित हो रही है उसका सम्बन्ध क्या है जिससे वह घटित हो रही है।

- **स्पष्टीकरण अथवा व्याख्या** : मनोवैज्ञानिक, निरीक्षण के आधार पर घटना के स्पष्टीकरण का प्रयास करता है। अतः उस सिद्धान्त का उद्‌भव होता है जो तथ्यों को स्पष्ट करता है।

- **भविष्यवाणी** : इसका सम्बन्ध व्यवहार के परिवर्तन अथवा परिमार्जन से होता है।

- **नियंत्रण** : यह चरण अवांछित व्यवहार को वांछित व्यवहार की ओर परिमार्जित करने पर ध्यान दिलाता है।

यह आवश्यक नहीं है कि मनोवैज्ञानिक खोज उपरोक्त सभी उपागमों का अनुसरण करे। एक मनोवैज्ञानिक घटनाओं की व्याख्या एवं वर्णन केवल उसी प्रकार कर सकता है जैसे कि एक चिकित्सक (शोध कर्ता) परिमार्जित व्यवहार को नियंत्रित करने में सम्मिलित होता है। अतः अध्ययन के उद्‌देश्य को ध्यान में रखकर शोध का लक्ष्य परिवर्तित हो सकता है। अतः मनोविज्ञान में शोध करने के लिए निम्नलिखित मुख्य चरणों का अनुसरण करना चाहिए।

1) **समस्या** : शोध प्रारम्भ करने का यह पहला चरण है। यदि आप किसी रुचिकर घटना के प्रति जिज्ञासु हैं और जिसकी आप व्याख्या खोजना चाहते हैं, उसके लिए एक प्रश्न बनाइयें। उदाहरणार्थ, एक शोधकर्ता के लिए यह अध्ययन करना रुचिकर होगा कि बच्चों को अधिक समय तक स्क्रीन के सामने (मोबाइल, कम्प्यूटर, टेलीविजन, टैबलेट) रहने से उनकी एकाग्रता एवं स्कूल निष्पादन कम हो जाता है।

2) **उपकल्पना/परिकल्पनाएं** : प्रश्न की एक संभावित व्याख्या उपकल्पना के रूप में जानी जाती है। किसी भी वैज्ञानिक खोज का मूल सिद्धान्त उपकल्पना परीक्षण है जो सिद्धान्त उत्पत्ति को आगे बढ़ाता है।

3) **उपकल्पना का परीक्षण** : उपकल्पना परीक्षण शोध डिजाइन पर निर्भर करता है, उस विधि के आधार पर जिससे शोधकर्ता आंकड़ों को एकत्रित एवं विश्लेषित करके समस्या की या प्रश्न की व्याख्या करता है।

4) **व्याख्या एवं निष्कर्ष** : परिणामों को प्राप्त करने के पश्चात्, यह स्पष्ट हो जाता है कि उपकल्पना स्वीकार हुई अथवा अस्वीकार हुई। यदि यह एक मात्रात्मक शोध डिजाइन है, तब आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक विधियों का प्रयोग करना चाहिए। परिवर्त्यों के मध्य सम्बन्ध या समूहों के बीच अन्तर को ज्ञात करने के लिए साख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाता है।

5) **परिणाम का प्रस्तुतिकरण :** परिणाम के प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे उसकी पुनरावृत्ति हो रही है, यद्यपि पुनरावृत्ति आसान नहीं है। शोध कैसे किया गया, यह क्यों किया गया और उसके क्या परिणाम थे उसके दूसरे शोधकर्ताओं से साझा करना चाहिए जिससे खोज जारी रहे और नई जानकारी शोध प्रश्नों में जुड़ती रहे।

बॉक्स 1.4 पुनरावृत्ति

अध्ययन की पुनरावृत्ति की जा सकती है, इसकी पुनरावृत्ति यह देखने के लिए की जाती है कि विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए क्या वही परिणाम प्राप्त होते है।

1.7 मनोविज्ञान में शोध की विधियां

मनोविज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन के विभिन्न उपागम मौजूद हैं। शोध डिजाइन एक ऐसी विधि है जिसका उपयोग शोधकर्ता आंकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या करने में होता है। यह गुणात्मक, मात्रात्मक अथवा मिश्रित उपागम हो सकता है (इसमें दोनों गुणात्मक एवं मात्रात्मक सम्मिलित होते हैं)। मुख्य रूप से, मनोवैज्ञानिक शोध में तीन प्रकार की विधियों का उपयोग होता है। ये वर्णनात्मक, प्रयोगात्मक एवं सह-सम्बन्धात्मक विधि है।

1.7.1 वर्णनात्मक विधि

वर्णनात्मक शोध डिजाइन के तीन मुख्य प्रकार हैं। ये केस अध्ययन, सर्वेक्षण, व्यवस्थित निरीक्षण है।

1.7.1.1 केस अध्ययन

केस अध्ययन प्रतिभागियों के छोटे समूह पर आधारित है। यह एक प्रतिभागी को अथवा छोटे समूह को सन्निहित करता है। इसका मुख्य आधार यह होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपूर्व है। यह एक व्यक्ति के व्यवहार एवं संवेगों का विस्तृत लेखा-जोखा देता है। फ्रायड द्वारा केस अध्ययन का उपयोग एक रुचिकर उदाहरण है, जिन्होंने केस अध्ययन विधि का उपयोग अपने मरीजों से सूचना ग्रहण करने में किया जिसने उन्हें व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के निष्कर्ष प्राप्त में सहायता पहुँचाई। जीन पियाजे ने भी केस अध्ययन विधि का उपयोग अपने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के महत्व प्राप्त करने में किया। रॉकीच (1964) का 'द थ्री क्रिस्ट्स ऑफ एपसिलान्टी : ए साइॅकालोजिकल स्टडी' मनोविदलन के तीन मरीजों का महत्वपूर्ण केस अध्ययन है। केस अध्ययन विधि की सबसे मुख्य कमी यह है कि इसके परिणामों को व्यवहारिक रूप से प्रयुक्त नहीं किया जा सकता, अर्थात् इसको सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता। यह विधि बहुत आत्मगत है, अतः आत्मगत पक्षपात पूर्ण है।

1.7.1.2 सर्वेक्षण

सर्वेक्षण विधि में शोधकर्ता अध्ययन किए जाने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में प्रश्न पूछता है। इसे आमने-सामने साक्षात्कार, टेलीफोन साक्षात्कार, इन्टरनेट अथवा प्रश्नावली की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है। बहुत सारे प्रतिभागियों को सर्वेक्षण विधि में सम्मिलित किया जा सकता है तथा बहुत सारे प्रश्नों को पूछा जा सकता है। यद्यपि शोधकर्ता को यह निश्चित करना होता है कि प्रतिभागी प्रतिनिधात्मक प्रतिदर्श समूह से लिए गए हैं। (प्रतिदर्श प्रतिभागियों की जनसंख्या के बड़े समूह में से यादृच्छिक क्रम में चयनित किए गए हैं)। सर्वेक्षण विधि की एक कमी यह है कि इसमें प्रतिभागियों द्वारा सही उत्तर नहीं दिया जा सकता है, कि यह उनका सही मत है। ऐसा उन परिस्थितियों में भी घटित हो सकता है जब प्रतिभागी यह सोचता है कि उत्तर सामाजिक रूप वांछित अथवा सही नहीं है।

1.7.1.3 व्यवस्थित निरीक्षण

व्यवहार के अध्ययन की एक महत्वपूर्ण विधि निरीक्षण है। यह आंकड़ों का संकलन अथवा

सूचनाओं को एकत्रण क्रमबद्ध ढ़ंग से करता है। इस विधि में प्रयोगकर्ता स्वतंत्र चर प्रक्षालन नहीं करता है। शोधकर्ता वातावरण में प्राकृतिक रूप प्राप्त होने वाली घटनाओं/व्यवहारों का क्रमबद्ध ढ़ंग से निरीक्षण करता है। कई बार निरीक्षण करने के पश्चात् शोधकर्ता निरीक्षण व्यवहार में संभावित कारणों को समझने का प्रयत्न करता है। शोधकर्ता यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे लोग अपने व्यवहार को परिवर्तित करते हैं और फिर तार्किक कारणों के आधार पर निरीक्षण परिवर्तन की व्याख्या करते हैं। जब व्यवहार के तार्किक कारणों को कम किए जाने के लिए कई निरीक्षणात्मक निगमन किए जाते हैं तब इसे आगमनात्मक तर्क के रूप में जाना जाता है। इसके आधार पर व्यवहार के विभिन्न सिद्धान्त विकसित किए गए। हालाँकि ऐसे बहुत से कारण हैं जो निरीक्षित व्यवहार में बाधा उत्पन्न करते हैं और सापेक्षिक रूप से निगमनात्मक निरीक्षण करना कठिन है। उसी प्रकार जैसे एक प्रयोग जिसमें अत्यधिक नियंत्रित अवस्था में सूचनाएं एकत्रित की जाएँ। क्रमबद्ध निरीक्षण में आंकड़ों को संकलन करने के दूसरे प्रारूप में अनुपूरक सूचनाओं को एकत्रित करने में भी प्रयुक्त किया जाता है। जब मानव व्यवहार का निरीक्षण प्राकृतिक अवस्था में अथवा जहाँ व्यवहार सम्पादित होता है उसे प्राकृतिक निरीक्षण के रूप में जाना जाता है। प्राकृतिक निरीक्षण प्रायः पशु व्यवहार के अध्ययन में प्रयुक्त किया जाता है। इसको मानव व्यवहार में भी प्रयुक्त किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, यदि शोधकर्ता व्यवसायिक केंन्द्र का अध्ययन करना चाहता है।

1.7.2 प्रयोगात्मक विधि

प्रयोगात्मक विधि में उस शोध समस्या निहित है जिसकी खोज किए जाने की आवश्यकता है। यह साहित्य की समीक्षा एवं सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर आधारित होता है, कुछ पूर्वानुमान निरीक्षित घटनाओं के आधार पर बनाए जाते हैं। यह पूर्वानुमान उपकल्पना/परिकल्पना के रूप में जाने जाते हैं, जो घटना का संभावित कथन होता है। वह व्यक्ति जो प्रयोग करता है उसे प्रयोगकर्ता के रूप में जाना जाता है और जिस व्यक्ति या पशु पर प्रयोग किया जाता है, उसे प्रतिभागी के रूप में जाना जाता है। प्रयोगकर्ता कुछ व्यवहारों अथवा घटनाओं को स्थिर रखता है जिसके व्यवहार को प्रभावित होने की संभावना होती हैं। कुछ स्थितियां होती है जो चर के रूप में जानी जाती हैं जो कि एक वस्तु अथवा घटना अथवा स्थिति हो सकती है, जिनके विभिन्न मूल्य होते हैं। ये मात्रात्मक रूप परिवर्तित हो सकते हैं तथा इनका आसानी से मापन किया जा सकता है। परिवर्त्य विभिन्न प्रकार के होते हैं। एक स्वतंत्र परिवर्त्य है जिसको प्रयोगकर्ता द्वारा प्रच्छालित किया जा सकता है तथा स्वतंत्र परिवर्तन के प्रभाव को आरित परिवर्तन पर देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ, यदि समस्या मूड पर तापक्रम के प्रभाव का अध्ययन है, तब तापक्रम स्वतंत्र परिवर्त्य एवं मूड आश्रित परिवर्त्य होगा। किसी विशेष उद्दीपक के लिए व्यक्ति की अनुक्रिया एक आश्रित चर हो सकता है। उद्दीपक एक घटना अथवा वस्तु है जो अनुक्रिया/प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्वतंत्र परिवर्त्य आश्रित परिवर्तनों को प्रभावित करने का कारण है, कुछ चीजों को नियंत्रित करना होता है। केवल कुछ विशिष्ट स्वतंत्र परिवर्त्य परिवर्तित होते हैं बाकी सभी दूसरे कारक जो अनुक्रिया अथवा आश्रित परिवर्त्य को प्रभावित करते हैं। उन्हें नियंत्रित रखा जाता है। कुछ वाह्य कारक होते हैं जो निष्पादन अथवा आश्रित परिवर्त्य (Variable) को प्रभावित कर सकते हैं, अतः उन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसी स्थितियां होती हैं जो परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं और उन्हें नियंत्रित होना चाहिए। परिवर्तन के इन बाह्य स्रोतों को नियंत्रित करने हेतु प्रयोगात्मक डिजाइन का उपयोग किया जाता है। एक डिजाइन नियंत्रित समूह डिजाइन कहलाती है। इसमें नियंत्रित समूह की स्वतंत्र परिवर्त्य नहीं दिया जाता है जब कि प्रयोगात्मक समूह को स्वतंत्र परिवर्त्य मिलता है। इसके पश्चात् नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक

समूहों का जहाँ तक संभव हो, आपस में यह जानने के लिए मिलान कराया जाता है कि क्या दोनों समूहों की अनुक्रियाओं में कोई अन्तर है? यदि अनुक्रिया में अन्तर मिलता है तो यह स्वतंत्र परिवर्त्य को दिये जाने के कारण होता है। नियंत्रित समूह एक आधारभूत लाइन की भांति कार्य करता है जिसके विपरीत प्रयोगात्मक समूह को चेक किया जाता है। विदिन समूह (समूह के साथ) डिजाइन में आधारभूत व्यवहार को स्वतंत्र परिवर्त्य दिये जाने से पूर्व नोट (रिकार्ड) कर लिया जाता है, पुनः स्वतंत्र परिवर्त्य दिये जाने के पश्चात् व्यवहार, नोट (रिकार्ड) किया जाता है। अनुक्रियाओं में यदि कोई परिवर्तन है तो इसे देखने के लिए पूर्व-पश्चात् तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। इस डिजाइन की विशेषता यह है कि प्रत्येक प्रयोज्य स्वयं अपने नियंत्रण को प्रस्तुत करता है, आधारभूत लाइन का व्यवहार जो स्वतंत्रता परिवर्त्य के दिए जाने से पूर्व स्थापित होता है, उसकी तुलना स्वतंत्र परिवर्त्य के दिए जाने के बाद व्यवहार में हुए परिवर्तन से की जा सकती है। स्वतंत्र परिवर्त्य का प्रभाव लम्बे समय तक नहीं होता है, कुछ समय बाद यह गायब हो जाता है। कभी-कभी शोधकर्ता ए-बी-ए डिजाइन में रुचि ले सकता हैं, जहां ए बिना स्वतंत्र परिवर्त्य की स्थिति है और बी स्वतंत्र परिवर्त्य के साथ की स्थिति है। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि निरीक्षित प्रभाव वास्तव में स्वतंत्र परिवर्त्य को दिये जाने के कारण उत्पन्न हुआ है।

एक अच्छे प्रयोग का यह गुण होता है कि इसकी पुनरावृत्ति की जा सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि उन्हीं स्थितियों में उन्हीं परिवर्त्यो के साथ दूसरा प्रयोगकर्ता प्राप्त परिणामों को सुनिश्चित तथा पुनः सुनिश्चित करने के लिए उसकी पुनरावृत्ति अथवा कई बार दोहरा सकता है। इसकी कुछ सीमाएं भी हैं, कभी-कभी प्रयोग प्रतिभागियों के लिए खतरनाक भी हो सकते हैं अतः प्रयोग करते समय कुछ नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखना चाहिए यहाँ तक कि उन पशुओं के लिए जिनका प्रयोग में उपयोग किया जा रहा है। प्रयोगों द्वारा प्राप्त परिणाम की सामान्यीकृत करने में सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि प्रयोगों को करने के लिए एक बनावटी स्थिति उत्पन्न की जाती है अतः इनके द्वारा प्राप्त परिणामों को वास्तविक जीवन अथवा प्राकृतिक परिस्थितियों में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। कभी-कभी जिस घटना को मापन का प्रयास किया जा रहा है, प्रयोग उसमें बाधा उत्पन्न कर सकता है, अतः प्रयोग की डिजाइन बनाते समय प्रयोगकर्ता को बहुत सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

1.7.3 सह-सम्बन्धात्मक विधि

जब दो परिवर्त्यो से एक प्रतिदर्श पर अथवा दो प्रतिदर्शों पर एक परिवर्त्य से रुचि की सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है, उस अवस्था में सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। यह विधि दो स्कोरों के सेटों के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों अथवा सहसम्बन्ध को समझने का प्रयास करता है। उदाहरणार्थ, यदि यह अध्ययन करना चाहते हैं कि क्या लम्बे व्यक्ति छोटे व्यक्तियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं? अथवा हम यह अध्ययन करना चाहते हैं कि क्या बुद्धिमान व्यक्ति खुश भी रहते हैं? यदि हम यह जानने में रुचि रखते हैं कि कैसे एक स्कोर की बढ़ोतरी दूसरे सम्बन्धित स्कोर को बढ़ाएगा अथवा घटाएगा। अथवा दो स्कोरों के सेटों में कोई सह-सम्बन्ध नहीं है। सांख्यिकीय विधि यह तुलना करने में हमारी सहायता करता है कि कैसे एक स्कोर विशेष दिए गए स्कोरों के सेट द्वारा इसके अनुकूलित स्कोर से इसे सम्बन्धित करता है। सह-सम्बन्ध का मूल्य सह-सम्बन्ध गुणांक r द्वारा मापा जाता है। सह-सम्बन्ध गुणांक का मूल्य +1 से -1 के मध्य परिवर्तित होता है। +1 का मूल्य पूर्ण सह-सम्बन्ध को दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि एक का स्थायी स्कोर सही अर्थ में वही है जो इसके साथ-साथ युग्म स्कोर में स्कोरों सेट में दिया गया है। यह एक पूर्ण अथवा उच्च सह-सम्बन्ध है, जो घटित हो सकता है। यद्यपि -1 सह-सम्बन्ध भी ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है लेकिन पुनः यह पूर्णता सही है, लेकिन यह प्रदर्शित करता है कि एक स्कोर के

मूल्य में बढ़ोतरी, उससे सम्बन्धित स्कोर के मूल्य को कम करेगी। अर्थात् एक सेट के स्कोर का उच्च स्कोर दूसरे सेट के कम स्कोर से सम्बन्धित होगा।

जब रकोरों के रोट के मध्य कोई राह-राम्बन्ध नहीं होता, यह शून्य राह-राम्बन्ध के नाम रो जाना जाता है, r =.00। इसका अर्थ यह हुआ कि स्कोर के सेट में एक स्कोर का मूल्य दूसरे सेट में स्कोर के मूल्य से सबन्धित नहीं है। अतः यह यहाँ पर किसी प्रकार की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। उदाहरणार्थ, यदि दो सेट के स्कोर के मध्य का सह-सम्बन्ध शून्य है, तो दूसरे सेट के स्कोर के आधार पर उस व्यवहार के घटित होने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। यदि बुद्धि एवं खुशी के मध्य सह-सम्बन्ध शून्य है, तब यह दिखलाता है कि बुद्धिमान लोग खुश रह भी सकते हैं और खुश नहीं भी रह सकते हैं। यदि उनके बीच का सह-सम्बन्ध +1 है, तब इसका अर्थ यह है कि बुद्धि के स्कोर में बढ़ोतरी के साथ उससे संबंन्धित खुशी के स्कोर में भी बढ़ोतरी होगी। यदि उनके मध्य सह-सम्बन्ध -1 है, तब यह प्रदर्शित करता है कि बुद्धि की बढ़ोतरी के साथ उससे सम्बन्धित खुशी कम होगी।

सह-सम्बन्ध स्कैटरग्राम द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है। एक सेट को स्कोर के मूल्य x- अक्ष पर तथा दूसरे स्कोर के मूल्य को y- अक्ष पर दर्शाते है। स्कैटरग्राम में विभिन्न स्कोर फैले होते हैं, और बिन्दु उनकी स्थिति अथवा स्कोर के मूल्य को दोनों मापों से इंगित करते हैं। अतः स्केटरग्राम द्वारा दो परिवर्त्यों के बीच पाए जाने वाली दिशा अथवा सह-सम्बन्ध की डिग्री को जानना आसान होता है। चित्र दो परिवर्त्यों के मध्य की दिशा एवं डिग्री को प्रदर्शित करता है (चित्र 1.11 देखें)।

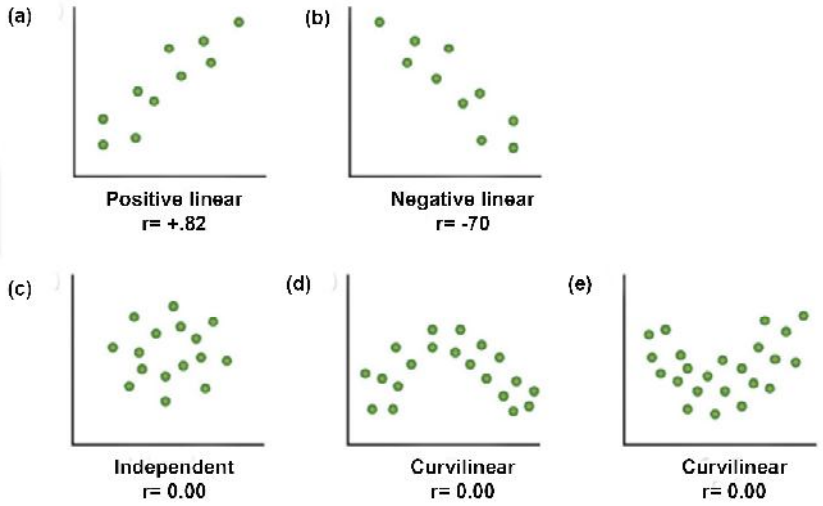

चित्र 1.11 : दो परिवर्त्यो के मध्य डिग्री एवं दिशा का सम्बन्ध_(पियर्सन सहसंबंध गुणांक)

बॉक्स 1.4: मनोवैज्ञानिक शोध में मानव प्रतिभागियों के प्रति नैतिकता

शोध मनोविज्ञान का एक अनिवार्य अंग है। शोध प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिको द्वारा किए जाते हैं जो सरकारी एजेंसियों द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का कड़ाई से पालन करते हैं अथवा उन दिशा निर्देशों का पालन करते है जो अमेरिकन साइकालोजिकल एशोसिएशन (एपीए) द्वारा प्रस्तावित किए गए हैं। शोधकर्ता को मानकों का कड़ाई से पालन करना चाहिए क्योंकि शोध मानव प्रतिभागियों अथवा प्राणियों पर किए जा रहे हैं। जब मानव प्रतिभागियों पर शोध किए जा रहे हैं तब ध्यान रखना चाहिए :

प्रतिभागियों को कोई नुकसान न हो।

किसी भी समय प्रयोग को छोड़ने की स्वतंत्रता हो।

प्रतिभागी की गोपनीयता को बनाए रखना चाहिए

किसी प्रकार के छल, कपट, धोखे का प्रयोग नहीं होना चाहिए (प्रतिभागी को शोध के स्वरूप के प्रति पूर्णतः जागरूक होना चाहिए)।

सहमति की सूचना (प्रतिभागी को शोध के दौरान अपने अधिकार की जानकारी होनी चाहिए)।

पुनः बतलाना (शोध के पश्चात् प्रतिभागी को शोध में प्रयुक्त विधि, उद्देश्य की व्याख्या करके बतलाना चाहिए)।

प्रत्येक शोध प्रस्ताव को संस्थागत समीक्षा बोर्ड ने समक्ष रखना चाहिए जो शोध प्रस्ताव के लागत-व्यय के विश्लेषण की समीक्षा करते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) वैज्ञानिक शोध के मुख्य पूर्वानुमानों को सूचीबद्ध करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'क्रमबद्ध निरीक्षण' को एक मनोवैज्ञानिक विधि के रूप में परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सह-सम्बन्ध का विस्तार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.8 भारत में मनोविज्ञान

भारतीय मनोविज्ञान पश्चिमी सिद्धातों और अवधारणाओं से काफी प्रभावित था। दलाल (2010) के अनुसार भारतीय शास्त्रों तथा ग्रंथों में निहित ज्ञान की ऐसी अवधारणा नहीं थी जोकि मनोविज्ञान के विकास के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का विकास कर सकें। भारत में मनोविज्ञान का अध्ययन 1916 में सर्वप्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुआ, जिसका पाठ्यक्रम 1905 में सर ब्रोजेन्द्र नाथ सील (कुलपति, कलकत्ता विश्वविद्यालय) द्वारा तैयार किया गया। हारवर्ड के प्रशिक्षित विद्धान छात्र डा. एन.एन. सेनगुप्ता प्रथम प्राध्यापक नियुक्त किए गए। शोध एवं अध्ययन में पूर्वी मॉडल को अपनाया गया। स्वतंत्रता के पश्चात्

मनोवैज्ञानिकों की प्रथम पीढ़ी दर्शनशास्त्र की पृष्ठभूमि के लोगों की थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गिरीन्द्र शेखर बोस जो एक मनोविश्लेषक थे, भारतीय मनोविश्लेषक सोसाइटी के प्रथम अध्यक्ष बने (1922)। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दु चिन्तन को फ्रायडियन प्रत्ययों के साथ मिलाया जिसकी प्रामाणिकता 1921 में उनकी डाक्टरेट की थीसिस 'कान्सेप्ट ऑफ रिप्रेशन' में परिलक्षित होती है। 1924 में मैसूर विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ हुआ। उसी वर्ष भारतीय मनोविज्ञान परिषद (इण्डियन सॉयकालोजिकल एसोसिएशन) की स्थापना हुई। दो वर्षों बाद प्रथम मनोवैज्ञानिक जर्नल (शोध का) 'इण्डियन जर्नल ऑफ सॉयकालोजी' प्रारम्भ हुआ है जो उस समय के उसके समकक्ष के जर्नल से बहुत आगे था। 1932 में मनोविज्ञान के कार्यक्रम की पढ़ाई अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुई। 1943 में मनोविज्ञान कार्यक्रम मद्रास विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुआ। 1957 में दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर मनोविज्ञान का प्रारम्भ दर्शनशास्त्र एवं मनोविज्ञान के साथ हुआ। 1964 में स्वतंत्र रूप से मनोविज्ञान विभाग की स्थापना स्वर्गीय प्रोफेसर गांगुली के निर्देशन में दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई। 1924 में श्री एम.वी. गोपालस्वामी मैसूर में मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे और वे मनोवैज्ञानिक मापनों में प्रशिक्षित थे। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेन्टल हैल्थ एण्ड न्यूरोसांइस (NIMHANS) का प्रारम्भ 1974 में बैंगलोर में हुआ। 1961 में प्रो. दुर्गानन्द सिन्हा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग का प्रारम्भ किया। भारत में मानव व्यवहार के अध्ययन का केन्द्रबिन्दु देशी तकनीकों का उपयोग पाश्चात्य विधियों के प्रभाव के साथ रहा। बहुत से महत्वपूर्ण जर्नल जैसे सायकॉलोजी एण्ड डेवलपिंग सोसायटीस, जर्नल ऑफ इण्डियन एकेडेमी ऑफ एप्लाइड सॉयकालजी, सायकालोजिकल स्टडीज, इण्डियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल सॉयकालोजी तथा बहुत से अन्य जर्नल प्रकाशित हुए एवं हो रहे हैं। बहुत से ऐसे परिषदों (एसोशियेशन) का जन्म हुआ जिनके द्वारा मनोवैज्ञानिक के साथ सम्प्रेषण एवं सीखने का न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में मजबूत हुआ, जैसे कि वेब पर इण्डियन सायकालोजिस्ट ग्रुप। भारतीय मनोवैज्ञानिक के प्रमुख मनोवैज्ञानिक समूह है जैसे, इण्डियन एसोसिएशन ऑफ सॉयकालोजी, इण्डियन ऐशोशियेशन ऑफ क्लीनिकल सॉयकालजी, नेशनल एकेडमी ऑफ सायकॉलोजी, इण्डियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड सायॅकालोजी आदि हैं। भारतीय मनोविज्ञान के क्षेत्र में कुछ प्रमुख एवं प्रभावशाली शोधार्थी एवं लेखक हैं जैसे एच.एस अस्थाना, आनन्द परान्जपे, जे.बी. पी सिन्हा, डी. सिन्हा, अमित रंजन बासु, आशीष नन्दी, सुधीर कक्कड़, मानसी कुमार, अजित दलाल, के. रामकृष्ण राव, गिरीवर मिश्रा, उदय पारिक, जनक पांडे, टी.एस. सरस्वती।

1.9 सारांश

हम इस इकाई के अन्त में पहुँच गये हैं, अतः इस इकाई में वर्णित मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में दोहरा ले।

- मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है और इस विज्ञान का उपयोग मानव की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन में किया जाता है।
- प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिक दार्शनिक थे परन्तु आगे चलकर इसके अध्ययन में अधिकांश आनुमानिक, वस्तुगत एवं वैज्ञानिक उपागमों को समाहित किया गया।
- मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्योंकि यह क्रमबद्ध एवं सावधानीपूर्वक आंकड़ों को एकत्रित करने का प्रयास करता है तथा नियंत्रित प्रयोगात्मक परिस्थितियों में मानव एवं पशुओं के व्यवहार अथवा घटनाओं को भी रिकार्ड करने का प्रयास करता है।
- मनोविज्ञान विभिन्न संदर्शो (पारम्परिक से आधुनिक) से मानव व्यवहार को देखता है (पारम्परिक से आधुनिक) जैसे चेतन का स्वरूप (संरचनावाद), मस्तिष्क कार्यात्मक

(प्रकार्यावाद), मानसिक अनुभव में संगठन का महत्व (गेस्टाल्ट), निरीक्षित अथवा क्षमतानुसार निरीक्षित व्यवहार (व्यवहारवाद), अचेतन प्रेरणा (मनोविश्लेषण)/तंत्रिका एवं ग्रन्थियों के कारणों से व्यवहार में परिवर्तन (जैविकीय) अर्धिगम, स्मृति एवं सामाजिक पर्यावरण की समझ (संज्ञान), व्यक्तिगत योग्यता, आत्म-सम्मान एवं उपलब्धि (मानवतावाद) व्यवहार का उद्विकासीय प्रारम्भ (उद्विकासीय) तथा संस्कृति एवं सामाजिक मानकों से प्रभावित व्यवहार (सामाजिक सांस्कृतिक)।

- मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला 1879 में लिपज़िग, जर्मनी में विलियम वुण्ट द्वारा स्थापित की गई। 1883 में यूएसए में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में जी स्टैनले हाल द्वारा स्थापित की गई।
- मनोविज्ञान का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे परामर्श, नैदानिक, संगठनात्मक, न्यायिक, खेल, स्वास्थ्य, स्कूल, आदि में होता है।
- मनोविज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन करने हेतु तीन मुख्य विधियों को प्रयुक्त किया जाता है। ये हैं प्रयोगात्मक विधि, व्यवस्थित निरीक्षण एवं सह-सम्बन्धात्मक विधि।
- प्रयोगात्मक विधि में एक शोध समस्या निहित होती है जिसके अन्वेषण करने की आवश्यकता होती है। साहित्यिक समीक्षा एवं कुछ सैद्धान्तिक पूर्वानुभावों की पृष्ठिभूमि के आधार पर निरीक्षित घटनाओं को तैयार किया जाता है। यह पूर्वानुमान परिकल्पना/उपकल्पना के रूप में जाना जाता है जो कि घटना के संभावित कथन के रूप में होता है।
- व्यवस्थिक निरीक्षण विधि में शोधकर्ता स्वतंत्र परिवर्त्य का कोई प्रहस्तन नहीं करता है। वह वातावरण में प्राकृतिक ढ़ंग से घटित होने वाले व्यवहारों/घटनाओं का क्रमबद्ध निरीक्षण करता है। विभिन्न/कई निरीक्षणों को करने के पश्चात् शोधकर्ता निरीक्षित व्यवहार के विश्वसनीय कारणों को समझने का प्रयास करता है।
- जब दो परिवर्त्यों द्वारा एक प्रतिदर्श पर अथवा दो प्रतिदर्शों द्वारा एक परिवर्त्य पर अपनी रुचि की सूचनाओं को एकत्र किया जाता है, तब सह-सम्बन्धात्मक विधि का उपयोग होता है। यह विधि दो सेटों के स्कोर के मध्य स्थापित उन सम्बन्धों अथवा सह-सम्बन्धों को समझने का प्रयास करती है।
- भारत में मनोविज्ञान के शिक्षण का उद्भव पाश्चात्य में मनोविज्ञान के विकास से बहुत अधिक प्रभावित था। सन् 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम मनोविज्ञान के अध्ययन का प्रारम्भ किया। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में मनोवैज्ञानिकों की प्रथम पीढ़ी में दर्शनशास्त्र की पृष्ठभूमि के लोग थे। बहुत से भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने अपने कठिन शोध एवं प्रभावशाली लेखन द्वारा मनोविज्ञान के विकास में सराहनीय योगदान दिया।

1.10 पुनरावलोकन प्रश्न

1) एक वैज्ञानिक व्याख्या जिसका जब तक पूर्ण रूप से परीक्षण नहीं हो जाता वह सुझाव रूप में रहते हैं, और यह कहलाती है एक

   क) सिद्धान्त

   ख) नियम

   ग) परिकल्पना

   घ) प्रयोग

2) जन्म, क्रम एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच सम्बन्ध की मात्रा को अनुमानित करने के लिए शोधकर्ता एक ..... अध्ययन करेगा/करेगी है।

   क) प्राकृतिक

   ख) सूची

   ग) सह-सम्बन्धात्मक

   घ) प्रायोगिक/प्रयोगात्मक

3) मनोविज्ञान के अध्ययन करने का निम्नलिखित में से एक कारण है -

   क) मानव मस्तिष्क को समझना और यह कैसे कार्य करता है

   ख) कैसे दूसरे को प्रहस्तित किया जाए

   ग) मानव व्यवहार को पूर्णतः समझना एवं उसकी भविष्यवाणी करना।

   घ) जीवन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों के उत्तर जानना।

4) मनोविज्ञान की प्रथम मूल पुस्तक थी

   क) द प्रिंसिपलस ऑफ सॉयकालोजी

   ख) द लॉज ऑफ सॉयकालोजी

   ग) द थ्यरिज ऑफ सॉयकालोजी

   घ) द नेचर ऑफ सॉयकालोजी

5) भारत में सर्वप्रथम मनोविज्ञान का अध्ययन ..... में प्रारम्भ हुआ।

   क) इलाहाबाद विश्वविद्यालय

   ख) कलकत्ता विश्वविद्यालय

   ग) दिल्ली विश्वविद्यालय

   घ) मैसूर विश्वविद्यालय

6) मनोविज्ञान को परिभाषित कीजिए एवं इसके मुख्य क्षेत्रों की विवेचना कीजिए।

7) मनोविज्ञान वैज्ञानिक विषय है? व्याख्या कीजिए।

8) मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास के मुख्य नामधारी व्यक्ति कौन थे?

9) अध्ययन की प्रयोगात्मक विधि का वर्णन कीजिए।

10) भारत में मनोविज्ञान के विकास को एक शिक्षा के रूप में चिह्नित कीजिए।

1.11 मुख्य शब्द

मनोविज्ञान : यह मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान है तथा इस विज्ञान का अनुप्रयोग मानव की विभिन्न समस्याओं को हल करने में होता है।

आनुभविक निरीक्षण : यह निरीक्षण तर्क-वितर्क, मतों एवं विश्वासों की जगह निरीक्षण पर आधारित होता है।

विज्ञान : यह ज्ञान का एक क्रमबद्ध स्वरूप है जो घटनाओं को सावधानीपूर्वक निरीक्षित एवं मापन द्वारा एकत्रित किया जाता है।

नैदानिक मनोविज्ञान : यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो असामान्य व्यवहार एवं मानसिक बीमारियों का मापन एवं इलाज करती है।

परामर्श मनोविज्ञान : इसका सम्बन्ध लोगों की कम तीव्रता वाले व्यक्तिगत एवं संवेगात्मक समस्याओं से होता है। जिन लोगों को मनपंसद कैरियर बनाने में अथवा शैक्षणिक प्रोग्राम में विषय चयन में सहायता की आवश्यकता होती है, वे परामर्श मनोवैज्ञानिक की सहायता लेते हैं।

प्रयोगात्मक विधि : इससे एक परिवर्त्य का प्रहस्तन (Manipulation) निहित होता है यह निर्धारित करने के लिए की एक परिवर्त्य के कारण दूसरे परिवर्त्य में परिवर्तन होता है। अथवा यह निर्धारित करने के लिए की एक परिवर्त्य द्वारा दूसरे परिवर्त्य में परिवर्तन होता है, एक परिवर्त्य को प्रहस्तनित किया जाता है

निरीक्षण विधि : निरीक्षण विधि में एक प्रतिभागी का प्राकृतिक सेटिंग में ध्यान रखना तथा उसके व्यवहार को रिकार्ड करना सम्मिलित होता है जिसे आगे चलकर विश्लेषित किया जा सके।

सहसम्बन्ध विधि : यह विधि, दो परिवर्त्यो के मध्य में पाए जाने वाले सम्बन्ध अथवा साहचर्य को समझने का प्रयत्न करती है।

1.12 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Atkinson, R. L., Atkinson, R. C., Smith, E. E., Bem, D. J., & Nolen Hoeksema, S. (2009). *Atkinson & Hilgard's Introduction to Psychology*. Wadsworth Publishing Company.

Benjamin Jr, L. T. (2007). *A Brief History of Modern Psychology*. Blackwell Publishing.

Ciccarelli, Sandra K., & White, J. Noland. (2018). *Psychology*. Pearson Education Limited.

Chaplin, James P., & Krawiec (1919). *Systems and Theories of Psychology*. Holt, Reinhart and Winston, Inc., USA.

Dalal, A. K. (2014). *A journey back to the roots: Psychology in India. Foundations and applications of Indian Psychology*, 18-39.

Hothersall, D., & Derksen, M. (1984). *History of Psychology*. Philadelphia, PA: Temple University Press.

Kalat, J. W. (2016). *Introduction to Psychology*. Nelson Education.

Leahy, Thomas Hardy. (2017). *A History of Psychology. From Antiquity To Modernity*. Routledge.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (2004). *Introduction to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill.

Mishra, G. & Baron, R. A. (2006). *Psychology: Indian Subcontinent* (5th Edition). New Delhi, Pearson Publication.

Sinha, D. (1994). Origins and development of psychology in India: Outgrowing the alien framework. *International Journal of Psychology*, *29*(6), 695-705.

1.13 चित्रों का संदर्भ

William Wundt: Father of Psychology. Retrieved November 03, 2018 fromhttp://www.famouspsychologists.org/wilhelm-wundt/

William James: Retrieved January 4, 2019 from,https://www.britannica.com/biography/William-James

Max Wertheimer, Kurt Koffka, Wolfgang Kohler. Retrieved January 4, 2019, from, http://slideplayer.it/slide/576962/2/images/40/Max+Wertheimer+(1880-1943)+Kurt+Koffka+(1886-1941)+Wolfgang+Kohler+(1887-1967).jpg

Ivan Pavlov, B.F.Skinner, J.B Watson. Retrieved on January 4, 2019, from https://www.emaze.com/@ATZZQQIO/teoras

Sigmund Freud. Retrieved on January 4, 2019, from https://www.alamy.com/stock-photo-sigmund-freud-1909-106547773.html

Abraham Maslow and Carl Rogers. Retrieved January 4, 2019, from http://slideplayer.cz/slide/2624258/

Hermann Ebbinghaus. Retrieved January 4, 2019, from https://quotesgram.com/hermann-ebbinghaus-quotes

Leon Festinger. Retrieved January 5, 2019, from https://hubpages.com/education/Applying-Leon-Festingers-Theory-of-Cognitive-Dissonance

David M. Buss. Retrieved January 5, 2019, from https://thebestschools.org/features/most-influential-psychologists-world

Where Psychologists Work?Retrieved November 03, 2018 from http://www.apa.org/careers/resources/guides/careers.pdf

1.14 ऑनलाइन स्रोत

- For more on Psychology as a Science, visit
  - https://cpa.ca/cpasite/UserFiles/Documents/publications/Short.pdf
  - https://www.simplypsychology.org/science-psychology.html
  - https://pdfs.semanticscholar.org/6ace/76be6864ce2024c154d5db2dfe190215bbaf.pdf

- https://cfl.in/wp-content/uploads/2015/02/Is-Psychology-a-Science.pdf

- For more information on Subfields of Psychology, visit
  - https://www.apa.org/careers/resources/guides/careers.pdf
  - https://rabbiablog.com/fields-branches-psychology-definition.pdf
  - http://www.eolss.net/sample-chapters/c04/e6-27-01-00.pdf
  - https://bsosundergrad.umd.edu/sites/bsosundergrad.umd.edu/files/psychology%20career%20subfields%20chart.pdf
- For an overview of Research Methods of Psychology, visit
  - http://lib.oup.com.au/secondary/science/Psychology/3and4/Oxford-Psychology-3-and-4-2e-Ch1-Research-methods-in-psychology.pdf
  - http://psycho.unideb.hu/munkatarsak/balazs_katalin/modszertan1/Modszertan_Goodwin_kivonat.pdf
  - http://cogprints.org/2643/1/EOLSSrm.pdf
- For more on Evolutionary perspective, visit
  - https://plato.stanford.edu/entries/evolutionary-psychology
- For an interesting article on Development of Psychology in India, refer to
  - Origins and Development of Psychology in India: Outgrowing the Alien FrameworkDurganand Sinha. *International Journal of Psychology.* First published: December 1994. https://doi.org/10.1080/00207599408246559
  - A journey back to the roots: Psychology in India. https://www.ipi.org.in/homepages/homepage-ajit.php

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1) (c), 2) (c), 3) (a), 4) (a), 5) (b)